45

श्रीः ।

मौज

तरङ्ग-पहिली ।

अर्थात्

उर्दू फार्सी के प्रसिद्ध कवियोंके मनोहर शेरोंका
नागरी दोहा सोरठोंमें अनुवाद.

पं० बद्रीनाथचतुर्वेदी एम. ए.
असिस्टंट सेक्रेटरी
ज्युडीशियल ब्रेंच हुजूरदरबार
गवालियर

कृत.

खेमराज श्रीकृष्णदासके
मुम्बई
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें
मुद्रितकराकर प्रकट किया ।

संवत् १९५५, शके १८२०.



प्रस्तावना.

कई वर्ष हुवे तब भाषा सीखनेकी अभिलाषासे Prof. Blackie के उपदेशानुकूल इस प्रकारके अनुवाद प्रारंभ किये गयेथे होते २ हरिकृपासे इनकी संख्या बढ़ गई और कई इष्टमित्रोंने भी इनको मुद्रित करनेके विषयमें आग्रह किया इसलिये पूर्व विचारके विरुद्ध इस प्रथम तरङ्गको छपवानेका साहस किया जाता है.

इस क्षुद्र पुस्तकमें कोई ऐसा विशेष गुण दृष्टिगोचर नहीं होता जिसके अवलोकनार्थ विद्वज्जनोंकी सेवामें प्रार्थना की जाय,परंतु एक बात अवश्य सूचनीय है कि आजकल बहुधा एतद्देशीय **उर्दू फारसी** के ज्ञाता **भाषा**को ग्रामीन बोली मानकर उसके अलौकिक लालित्य और अनूठे रस माधुर्यसे अपरचित रह जातेहैं. इसी भाँति **नागरी** के अनेक रसिकजन अन्य भाषाओंकी कविताको नीरस और असंस्कृत समझके आस्वादन किये बिनाही उसका तिरस्कार करने लगते हैं: आशाहै कि, ऐसे महाशयोंको दत्त चित्त होके इस **तरङ्ग** की सैर करना लाभदायक होगा. क्योंकि पूर्व सूचित महाशयोंका एक पुष्ट दोषाच्छादन यह है कि मनुष्यकी इतनी आयुष्य कहां है जो संपूर्ण भाषाओंको यथोचित सीख सके और एक भाषाकी कविताके सूक्ष्मभाव और वाक् लालित्य दूसरी भाषामें यथावस्थ कब प्रदर्शित हो सकते हैं ? परंतु हिंदी और उर्दूमें वस्तुतः अन्तर इतनाही है कि लिपि पृथक् पृथक् है तथा **एक**में संसकृत **दूसरी**में अरबी फारसी शब्दोंका बाहुल्यहै. कुछकालसे **एक** हमारेही आलस्य और दुर्लक्षसे स्थाईभावका सुख भोग रही है, और **दूसरी** गव्हरमेंटकी कृपादृष्टिके कारण प्रतिदिन वृद्धिगतिको प्राप्त होती जाती है. इसके अतिरिक्त व्यवहार प्रचारादिकमें कोई भेद नहीं है. और उर्दूका अधिकार हो जानेसे फारसी ऐसी सरल हो जाती है जैसी हिंदी जाननेवालेको संसकृत तो फिर ऐसी अवस्थामें अल्पायुका बहाना कैसे चल सकता है. इसीप्रकार दूसरा तर्क भी विचार करनेसे यथार्थ पाया नहीं जाता; क्योंकि वर्तमानकालमेंही हमारी आँखोंके सामने अंग्रेजी भाषाका नमूना उपस्थित है, जिसके अन्यशास्त्रोंको छोडकर केवल साहित्यकीही विस्मयकारक उन्नतिका कारण उसके असंख्यात अनुवाद

ग्रंथोंको कहना अन्यथा न होगा. इस कथनकी सत्यता सह ही विदित हो सकता है. कोई उत्तमभाव चाहे जैसी भाषामें भूषित हो रन्तु सच्चे कविके चित्तरूपी रसायनयन्त्रमें पड़नेसे, जहां प्रायः हाल ल विषसे भी अमृत बनताहै, कौनसा अलौकिक पदार्थ प्राप्त होगा य बतानेकी किसको सामर्थ्य है. महाकवि 'शेक्सपियर' Shakespea के अनेक प्रशंसनीय नाटक इस विषयके जगद्विख्यात उदाहरण हैं. और आगे एक 'सोरठे' में कहा भी है,–

सो०–जाकारजपै कोय, साहस करि बाँधे मर ॥
चाहे शूलहि होय, छोरहि फूल बना के ॥

यह बात सर्वदा स्मरण योग्य है कि सकल उन्नतियोंका मूल हेतु भाषोन्नति होती है और कोई कुछ कहै परन्तु 'हिंदुस्थान' की त भाषा 'हिंदी' और उसकी लिपि 'देवनागरी' ही हो सक्ती है न्य भाषा वा लिपि कदापि नहीं होसक्ती. बडे हर्ष का अवसर है कि 'ब ई' प्रान्तमें सबसे पहिले इस विषयका स्पष्टरूपसे बीड़ा उठाया गयाहै (खो 'श्रीवेङ्कटेशसमाचार, तारीख ५, १२ और १९ नवंबर १८९७ई० का म स्तंभ) और हमारे समाचारपत्रोंके ग्राहक अमेरिका, इंग्लंड, जर्मन, इत्यादि द्वीपद्वीपान्तरोंमें होनेसे उनका परिश्रमभी सफलीभूत ह रहा है. ऐसे २ कई एक शुभ शकुन दीख पडनेसे निश्चय होता है कि ह री मातृभाषाके जीर्णोद्धारका वह सौभाग्यदिवस अब समीपही प्रा होगया है जिसके चिन्तवन मात्रसे प्रत्येक देशहितैषी पुरुषका क मलहृदय आनंदानिलके क्रीडा स्पर्शसे प्रफुल्लित हो जाता है.

इसी शैलीके बहुत एक आग्रहोंके अनुकूल 'नागरीसाहित्य के 'सरस्वतीभंडार' में यह पुस्तक अर्पण की जाती है. व्यवस्था यादिकमें जो दोष इसमें रहगये हैं उनको पाठकगण क्षमा करें; यदि ई नुग्रहसे इसकी द्वितीय आवृत्ति तथा इसकी सहचारी 'तरङ्गों' के प्र ाश करनेका अवसर आया तो इन त्रुटियोंके सुधारनेका उद्योग किया जायगा.

अन्तमें उन मित्रवर्गोंको जिनके उद्देश तथा सहायतासे इस पुस्तकके मुद्रित होनेकी बारी आई है कोटिशः धन्यवाद प्रदानके हित यह लेख संपूर्ण किया जाता है.

लश्करग्वालियर.
भाद्र० शु० १० भृगुवार सं० १९५५. } अनुवा र्ता.

श्रीः ।

समर्पण.

दोहा ।

श्री अरु जय तित रहत नित, जित यदुनन्दप्रभाव ।
याते सूचित होउ प्रभु, माधो माधोराव ॥

श्रीमहाराजाधिराज !

यह तुच्छ पुस्तक किसी प्रकारकी ऐसी योग्यता नहीं रखती है जो श्रीमान्के चरणोंमें भेंट की जावे तथापि "पत्रं पुष्पं फलं तोयं" के न्यायानुसार इसको सत्य भक्ति पूर्वक अर्पित मानकर यदि श्रीमान् स्वीकार करैं तो इस रीतिसे निज जनके परिश्रमको सफलीभूत करना प्रभुकी जगद्विख्यात दयालुता और देशाभिमानके समीप दुस्तर नहीं है.

आपका दासानुदास,

बद्रीनाथ चतुर्वेदी.

श्रीः ।

श्रीहुजूर नृपतेंद्र श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमाधवराव शिंदे आलीजाह बहादुर जी. सी. एस. आई. ने निज भक्त प्रार्थनाको ९-३-१९ को स्वहस्ताक्षरसे स्वीकृत कर अनुवादक को कृतकृत्य किया.

सूचीपत्र।

सं.	विषय.	नंबर	पृष्ठ.	सं.	विषय.	नंबर	पृष्ठ.
१	मंगल, हरिस्तुति	१	२	घ	उदारता, कृपणता	१६०	४०
२	विनय	१३	४	च	वैराग्य	१८२	४४
३	उपासना, धर्म	२२	६	छ	जीवन, मरणादि	१९४	४८
अ	पश्चात्ताप, कलुष-गर्वता	३३	१०	६	आदरसत्कार	२२४	५४
				अ	अभिमान, दैन्य	२३१	५६
४	ज्ञान	५०	१४	७	सांसारिक गति	२४४	६०
५	परमार्थ	७३	१८	अ	सुख दुःख	२५९	६२
अ	मनशुद्धि	८६	२२	क	अपचय उपचय	२७८	६८
क	सन्तोष, धैर्य्य	१०२	२६	ख	दया, निष्ठुरता	२८५	७०
ख	तृष्णा, लोभ, अधीरता	१२०	३२	ग	नरपरिक्षा	२९५	७२
				घ	शत्रु मित्र	३०६	७४
ग	सम्पन्नता, दारिद्य	१४१	३४	०	टिप्पनी		८१

श्रीवैकुण्ठपतये नमः ।



श्रीगणेशायनमः ।

१ मंगलाचरण।



हरिस्तुति ।

दो०–ज्यों को त्यों तुहि लखिसकै, एती काकी सूझ ।
१–जेती जाकी सूझ है, तेती ताकी बूझ ॥

दो०-तोहि बिलोकि सुकछुलख्यो,इन अँखियनलौलीन ।
२–पलक रसन पलछिन रटन, हमकत नयन विहीन ॥

सो०-दृग तिल यह विस्तार, वाही कारीगर दियो ।
३–जल थल विम्ब अपार, सहजहि जाय समाय जिहि

दो०-सुमन सुमनबन श्रवन बनि, पियत सुधारस बैन ।
४–मन २ रसना बनि भजत, पात तोहि दिन रैन ॥

दो०-तेरीही धुनि मगन द्विज, करत शंख घनघोर ।
५–तेरे सुमिरन महजतन, मचत अजाँ को सोर ॥

दो०-मूरत से इनसान की, दरसत तेरी सान ।
६–होत लिखे अखरान ते, अर्थ रूप परमान ॥

दो०-जित देखो तित कहत सब, तोहि अनादि अनन्त ।
७–दिशि २तुव महिमा उदधि, उमह्यो अमित लसन्त ॥

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

۱ حمد

۱ تراچنانکہ توئی ہر نظر کجا بیند
بقدر بینش خود ہر کسے کند ادراک

۲ میری آنکھون نے تجھے دیکھہ کے وہ کچھہ دیکھا — ناسخ
کہ زبان مژہ پر شکوہ ہے بینائی کا

۳ وہی صانع ہے جسنے آنکھہ کے تل مین یہ وسعت دی — احمدی
سما جاتا ہے جسمین عکس صدہا کوس میدان کا

۴ گلستان مین گلون کے کان ہین آواز پر تیری — ایضاً
ترا ذکر خفی کرتا ہے ہر پتہ زبان ہو کر

۵ تیری ہی دُھن مین ناقوس برہمن گرم نالہ ہے — "
تیری ہی یاد مین ہے مسجدون مین غل اذانون کا

۶ ہے عیان جلوہ ترا انسان کی تصویر سے — ذوق
صورت معنی ہو ظاہر لفظ کی تحریر سے

۷ جہان دیکھو وہان اقرار ہے تیری خدائی کا — احمدی
ہر اک سو موج زن ہے بحر تیری کبریائی کا

दो०-धनी ऋणी इक सारिके, याडयोढ़ीके दास ।
८—सो जाधे कंगाल हैं, जाधे जिन के पास ॥

सो०-दान उदधिते नाथ, कौन सनाथ भयो नहीं ।
९—मुहर मीन अँग साथ; सीप हाथ मोती भरे ॥

सो०-छवि सरिता भइ गंग, तेरी किञ्चित झलक सों ।
१०—जो कोउ लखत तरंग, समझत ज्वाला तूरकी ॥

दो०—दरदर भटकत नहिं फिरूँ, मैं ही खोजत तोय ।
११—चन्द्र भानु निशदिन भ्रमत, मानहु फनि मनि खं य

दो०—जरठ [illegible]को गमन लखि, [illegible]न्वित परकास ।
१२—करत नि[illegible]को सबल है, तेरी नित तलास ॥

२ विनय ।

१३ सो०-नाथ ! दानदे मोहि, पुरुषारथ उत्साह अस ।
१—राजी राखूँ तोहि, रहूँ मगन इहि मौजमें ॥

१४ सो०—घट २ तेरो बास, जो तू होय प्रसन्न कहुँ ।
२—जगभर कृपा प्रकास, अनायास मो पै करहि ।

१५ दो०-कौन लगावै मोहि मुँह, तू जु न पूँछै बात ।
३—परछाँई लौं मोरि मुख, मुकर मुकरमें जात ॥

۸	درویش و غنی بندهٔ این خاک در اند آنانکه غنی تر اند محتاج تر اند	سعدی
۹	کس ز فیض بحر جودت درجہان محروم نیست پشتِ ماہی پر درم مشتِ صدف پر گوہر است	غنی
۱۰	تیرے پرتو نے کیا گنگا کو دریا نور کا جس نے دیکھا لہر کو سمجھا وہ شعلہ طور کا	ناسخ
۱۱	آوارہ اک ہمین نہ فقط دربدر پھرے کیا کیا تری تلاش مین شمس و قمر پھرے	شناور
۱۲	یہ گردشِ فلکِ پیر سے ہوا ثابت قوی ضعیف کو کرتی ہے جستجو تیری	آتش

۲ مناجات

۱۳	عنایت کر مجھے وہ قوتین اور عزم مردانہ رہون تیری رضا جوئی کی دُھن مین دلسے دیوانہ	احمدی
۱۴	سب کے دل مین ہے جگہ تیری جو تو راضی ہوا مجھپہ گویا اک زمانہ مہربان ہو جائے گا	غالب
۱۵	منہ لگا دے کون مجھکو گر نہ پوچھے تو مجھے عکس بھی دیتا نہین اب آئینہ مین رو مجھے	سودا

१६ दो०-पाचन तो रूसे नहीं, मो सों हे भगवान ! ।
४-रूसे चाहे और जो, होत न मेरी हानि ॥

१७ दो०-छमा दाम ही देत कह, औरहु कछु दे जाउ ।
५-जबहिं आप गाहक भये, बढ़्यो पापको भाउ ॥

१८ दो०-जो पूँजी मो पै रही, दई सौंपि सो तोहि ।
६-अबतू आप सँभारिले, घटी बढ़ी जो होहि ॥

१९ दो०-पंथ बताउ, बटाउ दुख, सकल कलेश नसाउ ।
७-उचित होय सो करि सबै, मोसों जिन कहिवाउ ।

२० सो०-दुरी न तोसों नाथ, जो बदरी मन कामना ।
८-यह बदरी को माथ, और पौरि तेरी यहै ॥

२१ दो०-हों अति चाउ प्रणामसे, भयो फरश इहि द्वार ।
९-परछाईं सम सीस सों पगलों बन्यो लिलार ॥

३ उपासना, धर्म्म ।

२२ सो०-वासों मिलन न होय, जोहू निज करतूत बल ।
१-तोहू चहिये तोय, बस भरि करिबोजतन मन ! ॥

२३ दो०-हरि सेवा चितलाइये, नव तरुणाई पाय ।
२-सूखिजाय जबलाकरी, किहु बिधि नाहिं नवाय

١٦ الٰہی زمن معدۂ من نرنجد
برنجد وگر ہر کہ رنجد برنجد

١٧ نقد آمرزش فقط کیا دو مجھے کچھ اور بھی — ناسخ
تم ہوئے جو مشتری یان نرخ عصیان بڑہ گیا

١٨ سپردم بتو مایۂ خویش را — نظامی
تو دانی حساب کم و بیش را

١٩ میرا ہادی میرا مونس ہو میرا غم رُبا تو ہو — احمدی
جو ہونا چاہیئے وہ ہو نہ کہوا مجھسے کیا تو ہو

٢٠ مخفی نہین ہے تجھسے تمنائے احمدی — ؍؍
یہ تیرا آستان ہے یہ سیمائے احمدی

٢١ اس در پہ شوقِ سجدہ سے فرشِ زمین ہون مین — ذوق
مانند سایہ سر سے قدم تک جبین ہون مین

۳ عبادت وعدل

٢٢ گرچہ وصالش نہ بکوشش بود — داراشکوہ
آنقدر ایدل کہ توانی بکوش

٢٣ بنو بہار جوانی اطاعتِ حق کن — صائب
کہ چوب خشک چو گردید خم نمیگردد

२४ दो०-बिहसत बदन बलायको, बदरी ले सिर भार।
३-जो सांचो करतारको, है तू ताबेदार ॥

२५ सो०-भौं सकोरि मत मीत, पहुंचै आय बलाय जो।
४-भली न मूँदन रीत, दर अतीत दैवी विमुख।

२६ दो०-आयसु ते तू ईस की, बदरी नारि न फेर।
५-जो फिर फेरैं नारि नाहिं, कोऊ तेरी बेर ॥

२७ सो०-सुर समाजके काज, जेते नर सब करि सकहिं।
६-करि न सकहिं सुरराज, पै नरके करतव्य जे ॥

२८ सो०-सुरपद सकिये पाय, पै निज पौरुषते नहीं।
७-याको अवस उपाय, हरिजन को सतसंग है।

२९ दो०-भोजन जीवन हेत अरु, भजन करनको साज
८-पै तेरे मन तो ठनी, जीवन भोजन काज ॥

३०सो०-करि अपनो करतव्य,अरुबिशेष जिन चाहि क छु।
९-तिसना थोरी सभ्य,! नीकी सेवा अधिकतें ॥

३१ दो०-भूलि कोपको राखिमत, किरपाहोप गँवार।
१०-दामन भरी पयोधके, लखि दामिनि चिनगा।

३२ सो०-धरम न्याव करि मीत,तो परीकबिच फलमिं।
११-जो उपासना रीत, दै न सकहि सौबरस में।

۲۴ باابروے کشادہ بلا را پذیرا شو
معبود را اگر بعبودیت اندری
فیضی

۲۵ چون بلاے میشود نازل مزن چین بر جبین
در بروے مہمانِ غیب بستن خوب نیست
صائب

۲۶ تو ہم گردن از حکم داور مپیچ
کہ گردن نپیچد ز حکم تو ہیچ
سعدی

۲۷ جو فرشتے کرتے ہین کر سکتا ہے انسان بھی
پر فرشتون سے نہو جو کام ہے انسان کا
ذوق

۲۸ تو خود فرشتہ شوا ماز خویش نتوان شد
بجز آنکہ صحبتِ خاصانِ کردگار بود
امیر خسرو

۲۹ خوردن براے زیستن و ذکر کردن است
تو معتقد کہ زیستن از بہر خوردن است
سعدی

۳۰ فرض بجا آر و مجو بیش از آنکہ
حرص کم از طاعتِ بسیار بہ
امیر خسرو

۳۱ غافل غضب سے ہو کے کرم پر نہ رکھہ نظر
پُر ہے شرارِ برق سے دامن سحاب کا
سودا

۳۲ عدالت کن کہ در عدل انچہ یکساعت بدست آید
میسر نیست در ہفتاد سال اہلِ عبادت را
صائب

३ (अ) पश्चात्ताप, कलुषगर्वता

३३ सो०-बदरी सकूं न आंख, न्याव हाटके भावके ।
१-पाप पोट मो कांख, छमा दाम कर रामके ॥

३४ दो०-लेत दयानिधि की दया, रोये धोये पाप ।
२-सौदा घटिको लाभ से, बिकत सींच दृग अ प

३५ दो०-असित मेघ सित जातहै, बितरनके गुनतात ।
३-त्योंही निर्मल होत मन, अरध निशा असुप ।

३६ दो०-है काबेकी आबरू, जो जमजमको सोत ।
४-तो मनमन्दिर स्वच्छता, नम अँखियन सो त

३७ सो०-बालक रोवत जात, खोय बाट निज सदनव ।
५-मैं रोऊँ किन तात, खोय दियो सदनैसही ॥

३८ दो०-बिन औसर बरषा भये, होतन खेती हेत ।
६-बूढ़े पनमें लाजमय, अँसुवाका फलदेत ॥

३९ सो०-खाली सीस दवात, यदपि सियाही सों भई ।
७-लिखत अजहुँ पैजात, सिसुलों पाटी पापकी ॥

४० सो०-जरा झराये दाँत, हरि सुमिरन मनना दियो
८खेलि बालकनि भांत, सुमिरन दियो हिरायसो

انفعالِ رندی

قدسی
۳۳
قدسی ندانم چون شود سودائے بازار جزا
او نقد آمرزش بکف من جنس عصیان در بغل

ذوق
۳۴
خریدار اُس کی رحمت جنس عصیان کی ہے گریہ سے
چھڑک کر بیچتا ہون نفع سے سودا خسارے کا

صائب
۳۵
ریزش سفید میکند ابر سیاہ را ؎
روشن شود دل از دلِ شبہا گریستن

ایضاً
۳۶
آبروے کعبہ گر از چشمۂ زمزم بود
کعبۂ دل را صفا از دیدۂ پُر نم بود

״
۳۷
طفل میگرید چو راہ خانہ را گم میکند
چون نگریم من کہ صاحب خانہ را گم کردہ ام

״
۳۸
باران بے محل ندہد نفع کشت را ؎ ؎
در وقت پیری اشک ندامت چہ میکند

غنی
۳۹
ہر چند شد تہی ز سیاہی دوات سر
مشق گنہ ہنوز چو اطفال میکنیم

ایضاً
۴۰
ز پیری ریخت دندانم ندادم تن بیاد حق
ببازی آخر این تسبیح چون اطفال گم کردم

४१ सो०-परै चूक बनि जोय, भाजि लाजकी सरलग ।
९-चूकत विथा न होय, दूतर यह अपराध ह ॥

४२ दो०-अम्बर तर अम्बर नहीं, भलोदिगम्बर छोर ।
१०-कारन या पोसाकमें उलट सुलट दुख थोर ॥

४३ दो०-सूखो ज्ञानी मूरखहि, पंथ बुझावन जोग ।
११-बाट टटोवत लकुटिलै, निपट आँधरे लोग ।

४४ दो०-ब्रह्मवेत्ता बावरे, स्वर्ग हमारे भाग ।
१२-पापिन के ही सीसपै, लसत छमाकी पाग ।

४५ सो०-दग मरोरि जिन जोय, कर्म हमारे कर्मठी ।
१३-बरषत करुना तोय, इन कारे बदरानते ॥

४६ दो०-मेरे पापी होन को, प्रभु दयालुता हेत ।
१४-मेघ मोहिं मद पानको, करत रहत संकेत

४७ दो.-नरक अनलते कबडरहिं करहिं जुनितमदपान
१५-पावक भख पंछीनको, ज्वाला सुमन समान ॥

४८ सो०-मोर प्रफुलित चित्त, तपन नरक सकुचाउँना ।
१६-गुलअनार रँग नित्त, रहूँ आँचमें लोह जि ॥

४९ दो०-काबे पहुँचे सेखजी, पाहन चूमन सौक ॥
१७-सब बुत चुम्बन जोगहे, जग मन्दिर में जौव ॥

۴۱	چون خطاے از تو سر زد در پریشانی گریز از خطا نادم نگردیدن خطاے دیگر است	صائب
۴۲	کب ہے عریانی سے بہتر کوئی دنیا مین لباس یہ وہ جامہ ہے کہ جسکا نہین سیدھا اُلٹا	
۴۳	سزد گر زاہدِ خشک است رہبر بے تمیزان را کہ نابینا عصا را رہنماے خویش می سازد	غنی
۴۴	نصیب ماست بہشت ای خداشناس برو کہ مستحق کرامت گناہگار آنند	حافظ
۴۵	بچشم کم مبین در نامۂ اعمال ما زاہد کہ می بارد ازین ابر سیہ باران رحمتہا	غنی
۴۶	رحمتِ حق سے ہے سبب میری گنہگاری کا ابر کرتا ہے اشارہ مجھے میخواری کا	ناسخ
۴۷	بادہ نوشان را غنی از آتش دوزخ چہ باک شعلہ شاخِ گل بود مرغان آتش خوار را	غنی
۴۸	ہون وہ شگفتہ دل نہ دوزخ مین تنگ ہون آہن کی طرح آگ مین بھی لالہ رنگ ہون	ذوق
۴۹	ایک پتھر چومنے کو شیخ جی کعبہ گئے ذوق ہر بت قابلِ بوسہ ہے اس بتخانہ مین	״

४ ज्ञान ।

५० सो०-हरे द्रुमन के पात, ज्ञानवानकी दृष्टि में ।
१-पात २ दरसात, ब्रह्म ज्ञान की संहिता ॥

५१ सो०-बदरी जो खुलजाय, मत अभेदको भेदतुहि ।
२-अजब रूप दरसाय, फूल सूल फिर लखैतो ॥

५२ सो०-कनिकाहै खरियान, बूँद विपुल सागर हमें ।
३-सूझत अखिल महान, चमतकार, लघु अंसमें ।

५३ सो०-बुलबुल देखन आउ, गुल घूंघट पट भानु मुखि
४-बौरे क्यों चित चाउ, भयो तोहि पटसों निपट

५४ सो०-अचरजकाजु पुनीत, दुर्‌यो रहे मुख मीतको
५-बीच उठाई भीत, मेरी माटी मूठि भर ॥

५५ सो०देखहितो चलि देख, बदरी वह प्रीतम अलख ।
६-दीख परत सत पेख, चित्त झरोखा झिरीते ॥

५६ दो०-सब कछु वासों लखत वह, लख न परतज्योंदीठ
७-नयनन ही में रहत पै, नयनन रहत अदीठ ॥

५७ सो०-देखहु बदरी नाथ, देत बड़ाई लघुन को ।
८- दृगतिल कियोसनाथ, नभ अपार जिहिमेंदिसत

۴ معرفت

برگ درختان سبز در نظر ہوشیار
۵۰ ہر ورقے دفتریست معرفتِ کردگار — سعدی

کھُل جائین تجھے معنی توحید اگر آتش
۵۱ پھر دیکھے تو دکھلائین گل و خار عجب روپ — آتش

دانہ خرمن ہے ہمین قطرہ ہے دریا ہمکو
۵۲ آے ہے جزمین نظر کل کا تماشا ہمکو — ذوق

بیا بلبل ببین در پردۂ گل آفتابے را
۵۳ چرا از سادگی محبوب خود کردی نقابے را — غنی

کیا عجب پنہان جو روے شاہد مقصود ہے
۵۴ بیچ مین دیوار کھینچی میری مُشتِ خاک نے — جلا

دیکھ گر دیکھنا ہے ذوق کہ وہ پردہ نشین
۵۵ دیدۂ روزنِ دل سے ہے دکھائی دیتا — ذوق

سب کو دیکھا اُس سے اور اُسکو نہ دیکھا جون نگاہ
۵۶ وہ رہا آنکھون مین اور آنکھون سے پنہان ہی رہا — ״

دیکھو چھوٹون کو ہے اللہ بڑائی دیتا
۵۷ آسمان آنکھ کے تل مین ہے دکھائی دیتا — ״

५८ सो०-आपकरत प्रतिरोध, तू अपनो जग मुकरमें।
९-कौन हतो जुविरोध, लो सन धरतो नाहिंतो ॥

५९ दो०-ध्यान धरत जब मीतको, आपुन परत दिखाय
१०-नयनन सनमुख होतही, मनदरपन बनजाय।

६० सो०-तोसों बाहिर नाहिं. जो कछु या संसारमें।
११-आप आपुतो चाहि, जो चाहे ह्यां है तुही ॥

६१ सो०-हौं ऐसो दरियाव, प्रति बुद २ महलोक जहँ।
१२-डुलत तरंग सुभाव,तुरत नयो सिरजत जगत।

६२ सो०-परछाईं लौं धाय, फिरूँ संग श्री अंगके।
१३-जानूँ ना लपिटाय, रहूँ बिलग याते सदा॥

६३ सो०-सुमन सुगंध सुरंग, तासों मम संबंध तस।
१४-रहत परस्पर संग, उड़त फिरत पै एकनित ॥

६४ सो०-मोहन करत निवास, मोहूसों मेरे निकट।
१५-यह अचरज दुख रास,दूर रहति मैं कूर नित॥

६५ सो०-कासों कहूँ सुनाय, कहा करूंरी पीउ तो।
१६-मेरे अंक सुहाय, पै मैं बिरह बिथा सहूं ॥

६६ सो०-पलछिन आठहु याम, रहत हमारे निकटजो।
१७-सो पूरन सुख धाम, सदा इन्द्रिनको अगम॥

۵۸ آپ آئینۂ ہستی مین ہے تو اپنا حریف
ورنہ یان کون تھا جو تیرا مقابل ہوتا ذوق

۵۹ جب تصور یار کا باندھا تو ہم آئے نظر
سامنے آنکھون کے آئینہ ہمارا دل ہوا ناسخ

۶۰ بیرون ز تو نیست انچہ در عالم ہست
از خود بطلب ہر انچہ خواہی کہ توئی

۶۱ ہون وہ دریا جسمین ہے ایک عرش اعظم ہر حباب
ملگئی ایک لہر جدم اک جہان پیدا ہوا ناسخ

۶۲ ساتھ اُن کے ہین ہم سایہ کی مانند ولیکن
اسپر بھی جدا ہین کہ لپٹنا نہین آتا ذوق

۶۳ مجھ مین اُسمین ربط ہی گویا برنگ و بوئ گل
وہ رہا آغوش مین لیکن گریزان ہی رہا ایضاً

۶۴ یار نزدیک تر از من بمن است
وین عجب تر کہ من از وی دورم سعدی

۶۵ چہ کنم با کہ توان گفت کہ اُو
در کنار من و من مہجورم ایضاً

۶۶ موجود ہے ہر آن جو نزدیک ہمارے
وہ وہم و گمان سے بھی حقیقت مین پرے کر زینت

६७ दो०–नाथ अचंभो कौनयह, सूझ बूझ एहिठाय ।
१८–दौरीं लाख सकीं नहीं, आपुहि आप लँघाय ॥

६८ सो०–अली बुद्धि सँग जाय, एकगली लयग्रामकी ।
१९–तरकसूर अरुझाय, तार २ अँचरा भयो ॥

६९ सो०–रहे मनोरथ दूर, फँस्यो जायमन तरकबन ।
२०–मानिन सेनी कूर, ऊँची नीची भूमिको ॥

७० सो०–कै हो परम सुजान, कै रहु निपट अजान तू ।
२१–जाइँ प्यासते प्रान, मृग तृष्णामें बीचकी ॥

७१ सो०–भाषत विप्र विचार, सेख विशेष भनतवहे ।
२२–दोउन एकही सार, बोलीको कछु भेदहै ॥

७२ दो०–चन्द्र भानु अलिरैन दिन, पल छिन चैन न लेत ।
२३–यह फिराकमें कौनके, फिर २ फेरीदेत ॥

५ योगपरमार्थ ।

७३ दो०–जग उपकार निवार अरु, नहिं परमारथ बाट ।
१–माला आसन गूदरी, बृथा बनावत ठाट ॥

७४ सो०–देखहु अचरजनैन, वंसीटेरीकहत सदा ।
२–बोलतलकरीबैन, सुर साधक की फूंकते ॥

٦٧ — درد

یارب یہ کیسا ظلم ہے ادراک و فہم یان
دوڑے ہزار آپ سی باہر نہ جاسکے

٦٨

باعقل گشتم ہمسفر یک کوچہ را از بیخودی
شد ریشہ ریشہ دامنم از خار استدلال ہا

٦٩ — غنی

دل باستدلال بستم ماندم از مقصود دور
نردبان کردم تصور راہِ ناہموار را

٧٠ — عرفی

قدم برون منہ از جہل یا فلاطون شو
کہ درمیانہ کزینی سراب و تشنہ لبی ست

٧١ — ناسخ

جو ہے کلام شیخ وہی قول برہمن
مطلب ہی ایک فرق فقط ہی لغات کا

٧٢ — کرم

خورشید و ماہ کو مین پھرتے ہی دیکھتا ہون
یہ کسکی جستجو مین آوارہ سر بہ ہین

۵ طریقت

٧٣ — سعدی

طریقت بجز خدمت خلق نیست
بہ تسبیح و سجادہ و دلق نیست

٧٤ — غنی

زبانِ نے بآواز بلند این حرف میگوید
کہ می سازد بہ یکدم چوب را صاحب نفس گویا

७५ दो०—साँसा आवा गमनको, जो तू करै विचार ।
३—श्वास २ पैकरि सकै, स्थिति प्रलय बिहार ॥

७६ दो०—अजब असत्ताको डगर, जो यह पंथ चलाय ।
४—पूरब गामिन सों मिलै, एकहि डगमें जाय ॥

७७ सो०—है यह मारग सोय, जिहि पहुँचै हरि लोकनर
५—द्वार हियेमें जोय, याजंगारी सिखिरको ॥

७८ दो०—हियकपाट खोलन चहत, खट खटाउ अधिरात
६—प्रातहोत सबदर खुलत, पै यहदर मुँदिजात ॥

७९ दो०—बिषय बासना पुष्ट अति, होत बुढ़ापे तीर ।
७—या नागिन बट पारिकौ, केस धौरई छीर ॥

८० दो०—काम कोप मोहादिके, दिन २ क्यों वशहोत ।
८—देउ घटाय अहारकिन, बल पकरै जियजोत ॥

८१ सो०—तन मन कियोन धूर, ह्वै जातो अक सीरजो ।
९—रेरसायनीकूर, पारो मारो तो कहा ॥

८२ दो०—फुँक्यो चपल कंचन असल, ताँबेको करिलेय ।
१०—जोचंचल चितफुक सकै, जानैका गुनदेय ॥

८३ सो०—गये चित्त मुरझाय, ऋद्धिसिद्धि केहि अर्थकी ।
११—मुरदा जल उतराय, पैको मानै सिद्धतिहि ॥

۷۵ غافل جو دم کی آمد و شد سے نہ ہووے تو
ہر دم ہے تجھکو سیر وجود و عدم نصیب
ذوق

۷۶ ہے عجب راہ عدم بھی جو چلا اس راہ مین
اک قدم مین پیشقدمون کی برابر ہوگیا
ناسخ

۷۷ ہے یہ وہ راہ کہ تا عرش پہونچتا ہے بشر
دلمین دروازہ ہے اس گنبد زنگاری کا
ایضاً

۷۸ در دل نیم شبان کوب کہ چون روز شود
ہمہ درہا بکشایند و در دل بندند
وفائی سفاہانی

۷۹ زیادہ ہوتا ہے پیری مین فربہ نفس امارہ
یہ بالون کی سفیدی شیر ہے اس مار رہزن کو
ذوق

۸۰ نفس امارہ سے کیون زیر ہوا چاہتا ہے
زور کر روح مین تقلیل غذا سے پیدا
صبا

۸۱ نہ مارا آپکو جو خاک ہو اکسیر بنجاتا
اگر پارے کو اے اکسیر گر مارا تو کیا مارا
ذوق

۸۲ سیماب خاک ہووے تو مس کو طلا کرے
اور دل جو خاک ہووے تو کیا جانے کیا کرے
ایضاً

۸۳ خرق عادت کے بکار آید دل افسردہ را
گر رود بر آب نتوان معتقد شد مردہ را
غنی

८४ सो०—तरबरलचिलचि जाय, दयो भार उपकार फल
१२—फलसों हाथ उठाय, याउपबनमें सरोवनि॥

८५ दो०—नहीं कामना बन विषै, बाघ बीगभयदाय।
१३—तो ही सों ह्याँ उठि लगै, तेरे संग बलाय॥

५ (अ) मनशुद्धि।

८६ दो०—पूँजी चित्त प्रकाश की, निब्रल मिताई होय।
१—मधुज मेल गुन सूत पद, सभा दिया की लोय॥

८७ दो०—जतन यहै मन सुच करन, उठै न अनरसभाय
२—इहि दरपन नत कीठ ह्वै, बैठि अवस यह जाय॥

८८ दो०—जाको मन होवे अमल, बढ़त घटन ते सोय
३—देखौ मोती जात बन, सूखि २ कन तोय॥

८९ सो०—कनकनमें दरशाय, भास भास करको प्रकट।
४—जो मन मल मिटि जाय, माटीमें दरपन मिलै॥

९० सो०—निरमल मन तिहि जान, दरपन सम जोलेय करि।
५—अपने विषे समान, हित अनहित सब भाँतिके॥

९१ सो०—बिमल भक्त जन टेक, दरपन लौं मन धरैं नहिं।
६—नीक अनीक विवेक, तासु करहिं जिहि पाहुनो॥

قد نهال خم از بار منت ثمر است
۸۴ ثمر قبول مکن سرو این گلستان باش — صائب

در وشتِ آرزو نه بود بیم دام و دد
۸۵ راہیست اینکہ ہم ز تو خیز د بلائے تو — فیضی

۵ (الف) صفا و روشنی قلب

دوستی با ناتوانان مایۂ روشندلی ست
۸۶ موم چون با رشتہ سازو شمع محفل میشود — صائب

صفا ہو دل کی یہی ہے صورت کہ دل مین آنے نہ دی کدورت
۸۷ کہ بیٹھ جائے گی بالضرورت اس آئینے مین یہ زنگ ہو کر — ذوق

ہے تنزل مین ترقی صاف دل کے واسطے
۸۸ دیکھلو بنتا ہے موتی خشک قطرہ آب کا — صفا

میتوان دید ز ہر ذرہ فروغِ خورشید
۸۹ دل اگر صاف شود روے زمین آئینہ است — غنی

روشن گہر کسے ست کہ ہر خوب و زشت را
۹۰ بر خویشتن چو آئینہ ہموار کردہ است — صائب

نہ رکھی خوبی و زشتی سے غرض آئینہ وار
۹۱ گھر مین مہمان جسے اہلِ صفا نے رکھا — ذوق

९२ दो०—लोक चक्षु लों एक चख, देखत सबको मीत ।
७—भले बुरे दोउ न मिलत, बिमल हृदय जनरीत ।

९३ सो०—बुरो जुदृष्टि समाय, तेरी तौतूहै बुरो ।
८—नीको तोहि दिखाय, है आछो तोहू तुही ॥

९४ सो०—जिन चित स्वयं प्रकास, दुरिन सकहि जग भेषमें
९—दीप सिखा सुचिरास, दिपति चीर फानूस मधि ॥

९५ सो०—मन उजास कब होय, बसे देह तम गेहके ।
१०—बाती लेय न लोय, जौलों साचे में रहै ॥

९६ दो०—निरमल मन तिहि जानिये, तत्व बेत्ता जोय ।
११—बिमल मुकुरकौ को कहे, रूप दिमानो होय ॥

९७ सो०—निरमलता जब होय, आकुलता चहिये अबस ।
१२—निरमल दरपन जोय, चपल लगत उपयोग तिहि ॥

९८ दो०—मल बिन निरमलता सुछबि, फल नहिं देय कदापि
१३—मधु समीरदरपन लगत, उपबनकलई थापि ॥

९९ दो०—बिमल मन जनन मिलनगुन, मलिन असितहियहोय
१४—लगत मोरचा लोह तन, परसत निरमल तोय ॥

१०० दो०—देखु सरोवर मुकरमें, नजर न भीजत पायँ ॥
१५—जिन्ह पवित्र मनबसनते, मल जल मधि असजायँ

ذوق	۹۲	خورشید وار دیکھتے ہین سبکو ایک آنکھ روشن ضمیر ملتے ہر ایک نیک و بد سے ہین
ایضاً	۹۳	ہے برا تو ہی نظر آیا اگر مجھکو برا تو ہی اچھا ہے تجھے معلوم گر اچھا ہو
″	۹۴	کب لباسِ دنیوی مین چھپتے ہین روشن ضمیر جامۂ فانوس مین بھی شعلہ عریان ہی رہا
غنی	۹۵	دل منور کے شود در ظلمت آباد بدن شمع را روشن نمی سازند تا در قالب است
ذوق	۹۶	دل صاف ہو تو چاہیے معنی پرست ہو آئینہ خاک صاف ہے صورت پرست ہے
ناسخ	۹۷	ہے صفا حاصل تو بیتابی بھی ہے اے دل ضرور صاف ہو کر آئینہ محتاج ہے سیاب کا
غالب	۹۸	لطافت بے کثافت جلوہ پیدا کر نہین سکتی چمن زنگار ہے آئینۂ یادِ بہاری کا
ذوق	۹۹	صحبتِ صافی دلان سے ہون مکدر تیرہ دل زنگ سے آلودہ ہو جاتا ہے آہن آب مین
ایضاً	۱۰۰	چشمۂ آئینہ مین کب تر ہوا پائے نگاہ اسطرح جاتے ہین دیکھا پاکدامن آب مین

१०१ दो०—यह बिलास जल बुन्दको,जाय तोय निधि खोय
१६—दरद बढे मर्यादते, आपुहि ओषद होय ॥

५ (क) संतोष, धैर्य।

१०२ सो०—बीर धीर सन्तोष, मन दरपन रोसन करैं।
१—हरै हीय तमदोष, जौकी रोटी चंद्रसो ॥

१०३ सो०—बेझर नीकी तोहि, भरे पेट गुन लगै नाहिं।
२—मेरो प्रीतम होहि, तेरे जान कुरूप जो ॥

१०४ दो०—रहे अघाने जनम भरि, लै सन्तोष सवाद।
३—सदा बरत दीनों सदा, हरि इच्छा परसाद ॥

१०५ सो०—सुख दुख हैं सब ठौर, जो कुछहै सबहै भलो।
४—वाहीको सुख और, है वाहीको दुःखहू ॥

१०६ दो०—जग बगियामें सुमन की, तृप्ति ईर्षा जोग।
५—एक बसन दिन द्वैक को, जीवन डारो भोग ॥

१०७ सो०—हरि इच्छाके बाग, कदम सरों समगाढि दृढ़।
६—हेर फेर दे त्याग, मौसम शिशिर बसन्तकी ॥

१०८ सो०—मौंसकोरि मतयार, आपति बात प्रचंडसे।
७—सागर क्षोभ अपार, मोतिन पानी थिर रहत ॥

۱۰۱	عشرتِ قطرہ ہے دریا مین فنا ہو جانا درد کا حد سے گذرنا ہے دوا ہو جانا	غالب

۵ (ب)، قناعت و صبر۔

۱۰۲	روشن بقناعت شود آئینہ باطن ماہے کہ دل افروز بود نان جوین ست	غنی
۱۰۳	اے سیر ترا نان جوین خوش نہ نماند معشوق من است آنکہ بنزد تو زشت است	سعدی
۱۰۴	قناعت کے مزے سے سیر رکھا عمر بھر ہمکو رہا خوانِ توکل پر طریقہ میہمانی کا	شمیم
۱۰۵	ہر جا خوش و ناخوش است نیکوست یا شادیِ اوست یا غم اوست	نظیری نیشاپوری
۱۰۶	باغِ جہان مین گل کی قناعت ہے جائے رشک عمر دو روزہ ایک قبا مین تمام کی	آتش
۱۰۷	چون سرو در مقامِ رضا پایدار باش آزادہ ز انقلاب خزان و بہار باش	صائب
۱۰۸	از تند بادِ حادثہ چین بر جبین مزن در بحر ہمچو آب گہر بر قرار باش	ایضاً

१०९ दो०—समुहे बिपति प्रवाहके, मुख नहिं मोरत बीर ।
८—सूधो पैरत सिंहहै, धारा नीर गँभीर ॥

११० दो०—अनावृष्टिके कालमें, मोती जल न सुखाहिं ।
९—निस्प्रेहीको सूमता, नभकी सालत नाहिं ॥

१११ सो०—बांधी निज करबीर, मेंहदी अस सन्तोषकी ।
१०—बसि समुद्र जस धीर, मूंगा मोती छुवे नहिं ॥

११२ सो०—संतोषी मन नाहिं, चिन्ता औ सन्ताप मग ।
११—तृप्ति जगतके माहिं, कौन भिखारी होतहै ? ॥

११३ सो०—खींचीं निज २ ओर, जो २ जा मन कामना ।
१२—दोऊ हाथ सकोर, मैं दे राखे काँखमें ॥

११४ दो०—आज्ञापालक दास चित, नहिं जग अनहित दाग ।
१३—अगिन भई नमरूदकी, इबराहीमहि बाग ॥

११५ सो०—चित्त तृषा सों जोड़, मगन कटोरामें सलिल ।
१४—गरे करे जन छोड़, और नजर काको परो ? ॥

११६ सो०—जाके मन सन्तोष, ताहि असन निज करन नित ।
१५—रहत अँगूठा चोष, बालक पय पाये बिना ॥

११७ सो०—माखी सहजहि जात, फँसि मकरीके जालमें ।
१६—त्यागीके कर तात, असन बसन लगि कल्पतरु ॥

پھرتا ہے سیل حوادث سے کہین مرد کا منہ شیر سیدھا تیرتا ہے وقت رفتن آب مین	۱۰۹	ذوق
در خشک سال آب گہر کم نمی شود بخل فلک باہل قناعت چہ می کند	۱۱۰	صائب
بدست خود چنان بستم حنائے بے نیازی را کہ ہمچون پنجۂ مرجان دُر از دریا نمی گیرد	۱۱۱	غنی
در دل بے آرزو راہ غم و تشویش نیست در جہان بے نیازی ہیچکس درویش نیست	۱۱۲	صائب
ہر کس کشیدہ آرزوئے خویش در کنار ما دست خویش در بغل خود کشیدہ ایم	۱۱۳	غنی
نیست دلگیری ز دنیا بندۂ تسلیم را آتش نمرود گلزار است ابراہیم را	۱۱۴	صائب
با تشنگی بساز کہ در ساغر سپہر غیر از دل گداختہ آبے ندید کس	۱۱۵	ایضاً
توکل پیشہ را روزی بدست خویش میباشد مکد انگشت خود کودک چو نبود شیر پستان را	۱۱۶	غنی
مگس را بے تردد عنکبوت آرد بدام خود ید طولی است در تحصیل روزی گوشہ گیران را	۱۱۷	صائب

११८ दो०—बसें कुंज सन्तोषमें, धन्य अदृष्टहि मान ।
१७—न्यून अधिक बदरी तिनहि, दोनों होत समान ॥

११९ सो०—सदा बरतहू और को, दीजै बदरी त्याग ।
१८—परयो भानुउपकारको, दधि सुत छाती दाग ॥

१२० दो०—सीप भाँति मोतीनको, तोहि बनावें धाम ।
१९—जो बदरीदिविलोकसे, याँचै असन मुदाम ॥

१२१ सो०—बिघन परै जब काज, खुलत जीविका द्वार तब ।
२०—आवत यह आवाज, चाकीते मम कानमें ॥

१२२ सो०—उदय होत जब मीत, तब बूढ़ो नभ कहत हँसि ।
२१—बिधिकी गति बिपरीत, रोटी देतहि लेतरद ॥

१२३ दो०—बैठि दिननके फेरते, बदरी मत मन मार ।
२२—धीरज करुवो देत पै, फल मीठे रुचिसार ॥

१२४ सो०—समय पाय प्रतिकूल, बिगरे कारज धीर धरि ।
२३—दरजी कतरे तूल, बहुर सिवनके कारने ॥

१२५ सो०—बन्द एक दर होय, दश द्वारे खुल जातहै ।
२४—गूंगी बानी गोय, टीका दस २ आँगुरीं ॥

१२६ दो०—हरैं दुःख जो औरके, हारें निज दुखपाय ।
२५—टाँके ज्यों निज घायपै, सकैन सूज लगाय ॥

١١٨	جو کنجِ قناعت مین ہین تقدیر پہ شاکر ہے ذوق برابر انہین کم اور زیادہ	ذوق
١١٩	کاسۂ خود پر مکن زنہار از خوان کسے داغ از احسان خورشید است بر دل ماہ را	غنی
١٢٠	چون صدف گنجینۂ گوہر ترا صائب کنند رزق خود در یوزہ گر از عالم بالا کنی	صائب
١٢١	فتد چون رخنہ در کار تو بکشاید در روزی ز سنگِ آسیا در گوشم این آواز می آید	غنی
١٢٢	دردم صبح غنی پیر فلک می گوید کہ قضا نان دہد آن لحظہ کہ دندان گیرد	ایضاً
١٢٣	منشین ترش تو از گردش ایام کہ صبر گرچہ تلخست ولیکن بر شیرین دارد	سعدی
١٢٤	گر فلک کار ترا برہم زند از جا مرو جامہ را خیاط سازد قطع بہر دوختن	غنی
١٢٥	دہ در شو وکشادہ چو شد بند یک درے انگشت ترجمان زبان ست لال را	غنی
١٢٦	چارہ سازان ہم غنی از درد خود بیچارہ اند کے تواند بخیہ زد سوزن بہ زخم خویشتن	غنی

१२७ दो०—आगे काहू धनीके, हाथ सीसपै जाय ।
२६—या ते तो वा हाथपै, चूना लेय बुझाय ॥

१२८ सो०—खानन चाहे मार, जो संसारी नरनकी ।
२७—घर घर मतझक मार, मुहरालों सतरंजके ॥

१२९ दो०—दीरघ साधन सों मिलै, सो अमोल फल जानि।
२८—हरि याचत रीते फिरैं, कर तोडर मत मानि ॥

५ (ख) तृष्णा, लोभ, अधैर्य ।

१३० दो०—सबके कंस कपारके, औंधिधरे करतार ।
१—ताहूपै नर नरनते, मांगत हाथ पसार ॥

१३१दो०—उदर काज उद्योग नर, करि अपमान कमाय ।
२—चाकी मुखदै आँगुरी, पीसिलाजसों जाय ॥

१३२ दो०—तिसना दुनिया दारकी, दुनिया पायन जाय ।
३ मुख भरि आवे नीरतिहि, तिसना बुझत अघाय॥

१३३दो०—सोने रूपेके निकर, तृष्णा दून होय ।
४—उरध प्रकृति सों क्रूरगति, सम्पति सकहिन खोय

१३४ सो०—तिसनाभये प्रधान, पुनि पुनि कुदी न टिकसकै
५—जैसे तिस अकुलान, जीहनिकसि मुखसों परत

۱۲۷ بدست آہک تفتہ کردن خمیر
بہ از دست بر سینہ پیشِ امیر — سعدی

۱۲۸ سیلی نخوری تا ز کفِ اہل زمانہ
چون مہرۂ شطرنج مرو خانہ بخانہ — غنی

۱۲۹ از گران قدریست ہر مطلب کہ دیر آید بدست
از تہی برگشتن دست دعا غمگین مباش — صائب

۵ (ج) حرص و طمع و بے صبری

۱۳۰ سب کے خالق نے بنائے کاسۂ سر واژگون
آدمی اس پر بھی پیشِ آدمی سائل ہوا — ناسخ

۱۳۱ جستجو از بہر روزی باعث شرمندگی ست
زین خجالت آسیا انگشت دارد در دہان — غنی

۱۳۲ کے تواند شد ز دنیا چشم دنیادار سیر
تشنگی زایل نگردد ہرگز از آب دہن — ایضاً

۱۳۳ حرص را جمع زر و سیم نسازد خرسند
گنج بیرون نبرد کجروی از طینت مار — صائب

۱۳۴ حرص چون غالب شود خلوت نشینی مشکل است
تشنہ چون گردد زبان از کام می آید برون — غنی

१३५ दो०—भाजि छुटै धोके धड़ि, बँधुवा कैद फिरंग ।
६—आस छूटिवेकी नहीं, ग्रस्यो लोभजिहि तंग ॥

१३६ सो०—'बस' कहिते न अघाय, यह जन पूरे रामके ।
७—देते राम सिहाय, सब प्रभुता लोभीन जो ॥

१३७ दो०—लोभ पोखरा कोपियो, एक बूँद भरतोय ।
८—सोहू अन्त निकरि गयो, लाज पसीना होय ॥

१३८ सो०—मत मन आनि अजान, लालच तिसना वासना ।
९—आसय नसत निदान, पोथीमें कीरा लगे ॥

१३९ दो०—चित्त उदर चिन्ता फँस्यो, खोय हरष सामान ।
१०—ऊजर बाग अभागजुत, खेती करत किसान ॥

१४० दो०—सोनो रूपो देखिके, क्यों न मुदित नर होय ।
११—होत धुवाँ टक सारको, नीको अंजन लोय ॥

५ (ग) प्रसन्नता, दारिद्र्य ।

१४१ सो०—है रहिबो आसान, सावधान मद पान करि ।
१—मरद ताहि पै जान, धनहि पाय इतराय नहिं ॥

१४२ दो०—वसी करन उच्चाटके, पूँछत काहे तंत्र ।
२—जान रुपैयानकसको, सिद्ध जाग तो जंत्र ॥

۱۳۵ میتوان جستن بہ مکر و حیلہ از قید فرنگ
نیست امید رہائی باگرفتار طمع
صائب

۱۳۶ منہ سے بس کہتے نہ ہرگز یہ خدا کے بندے
گر حریصوں کو خدا ساری خدائی دیتا
ذوق

۱۳۷ از جوئے حرص بیش نخوردم ز قطرہ
آن نیز عاقبت عرقِ انفعال شد
غنی

۱۳۸ حرص و ہوا کو سینہ میں غافل جگہ نہ دے
مطلب کو فوت کرتا ہے کیڑا کتاب کا
آتش

۱۳۹ دل اسباب طرب گم کردہ در بند غم نان شد
زراعت گاہ دہقان میشود چون باغ ویران شد
غالب

۱۴۰ سیم و زر کے دیکھنے سے خوش نہ کیوں انسان ہوں
طوطیائے چشم ہوتا ہے دھواں ٹکسال کا
نا[illegible]

۵ (د) تونگری و افلاس

۱۴۱ بادہ نوشیدن و ہشیار نشستن سہل است
گر بدولت برسی مست نگردی مردی

۱۴۲ کیا پوچھتا ہے تو عمل بغض و محبت
چلتا ہوا تعویذ سمجھ نقش درم کو
ذوق

१४३ दो०—एक दियासे चासिबो, कयुक सहजही बात ।
३—सम्पति पायन भूलिये, सुजन सनेहिन तात ॥

१४४ सो०—सहज तुष्टिको जान, तात रसायन आतमिक
४—यदपि नाहिं धनवान, मनही मन भरपूर रहु ॥

१४५ सो०—जगके धनिक अजान, काजानें या कोसको ।
५—औरहि सम्पति जान, मनोकामना त्याग सुख ॥

१४६ सो०—बढे अभाव अपार, तुरत धरत धृति आयकर ।
६—देह वर्तुलाकार, चाहन राखहि लकुटकी ॥

१४७ दो०—बुद बुद लों निज सदन सों, मदन पदारथकाढ़ि ।
७—जो तेरे घरना धसे, फिर बलाय जल बाढ़ि ॥

१४८ सो०—खाली हाथनतात, भलीसामरथ हस्तगत ।
८—चाकी बैठी खात, आय जिमावत पाहुने ॥

१४९ दो०—मन मौजिनके हाथमें, मालकहाँ ठहराय ।
९—प्रेमी मन धीरज नहीं, जलचलनी नटिकाय ॥

१५० सो०—साँपहि मिलत अहार, देखो और न धूरित ते
१०—खाक सीस पैडारि, ऐसी दौलत मिलनके ॥

१५१ सो०—खीसा रहत हमार, बुद बुद समरी तो सदा ।
११—मुहरैं तनपै भार, होयँ न मीन कमीन लों ॥

از چراغے میتوان افروخت چندین شمع را
۱۴۳ دوستے چون رود بہ از دوستان غافل مشو — صائب

غناء طبع بود کیمیائے روحانی
۱۴۴ چو نیست مال میسر بدل تونگر باش — ایضاً

منعمانِ بیخبر کو کیا خبر اس گنج کی
۱۴۵ دولت آسایش ترک تمنا اور ہے — عالی

حاجت از حد چو رود دست دہد استغنا
۱۴۶ قد خم حلقہ چو شد کاندارد بعصا — غنی

خانہ خالی کن ز اسباب تعلق چون حباب
۱۴۷ تا نیاید راہ در کاشانہ ات سیل بلا — ایضاً

مرا چون آسیا خوش دستگاہے در تہی دستی ست
۱۴۸ کہ روزی آورد در خانۂ من مہمان از خود — ایضاً

قرار در کفِ آزادگان نگیرد مال
۱۴۹ نہ صبر در دل عاشق نہ آب در غربال — سعدی

روزئ ما نیست غیر از خاک
۱۵۰ خاک بر فرق مالداریہا — غنی

پیوستہ کیسۂ ما ہمچون حباب خالی ست
۱۵۱ مارا درم چو ماہی جز و بدن نگردد — ایضاً

१५२ दो०—भुंजी मछरिया कहतहै, देखकरमलिखधार ।
१२—दाग देतहैं उनहि जिन्हि, मुहरें देत अपार ॥

१५३ दो०—जानो अधिक फकीरपै, अमीर सों औभार ।
१३—इक कामरिके बोझपै, चढत दुसाला चार ॥

१५४ सो०—तो को करत अमीर, जो कोऊ नहिं बावरे ।
१४—वाको तेरी पीर, है तोसों निश्चय अधिक ॥

१५५ सो०—नरके दोस न जात, बदरी भवनिधि पाय निधि।
१५—कंचन नाहिं सकात, मेटि कसोटी कालिमा ॥

१५६ दो०—चले जात गुल कहत तब, सुमनलता के पात।
१६—तिन छोरैं जरदार किन, जिनके खाली हात ॥

१५७ दो०—निरधन बसे धनीन सँग, लहत सोच संकोच ।
१७—डोरामुक्ता हलनि मधि, होत दूबरो पोच ॥

१५८ सो०—सफल एक नहिं होय, करै लाख उद्योग जो ।
१८—बिन जरको नर जोय,सो बिन परके सर सरिस।

१५९ दो०—मिलत चुगा बहिरारसे, परे पींजरा कीर ।
१९—अम्बर तर आधीन द्विज,क्यों नाहक दिलगीर॥

ذوق ۱۵۲
کہتی ہے ماہی بریان کہ دبیران قضا
داغ دیتے ہین اُسی جسکو درم دیتے ہین

ناسخ ۱۵۳
بار دنیا ہے امیرون سے فقیرون پر زیاد
بوجھ کم ہوتا ہے کمبل سے نہایت شال کا

سعدی ۱۵۴
آنکس کہ توانگرت نمی گرداند
او مصلحتِ تو از تو بہتر داند

غنی ۱۵۵
غنی از دولت دنیا نگر دعیب کس زایل
کہ زر نتواند از روئے محک بردن سیاہی را

ناسخ ۱۵۶
گل چلے جاتے ہین تو کہتے ہین برگ گلبن
ہم تہیدستون سے کیونکر نہون زردار جدا

صائب ۱۵۷
نیست مفلس را ز قرب اغنیا جز پیچ و تاب
رشتہ از گوہر ندارد بہرہ جز لاغر شدن

غنی ۱۵۸
سعی مفلس کے بجائے میرسد
آدمی بے برگ تیر بے پرست

صائب ۱۵۹
در قفس روزی ز بیرون میخورد مرغ قفس
غم ز بے برگی چرا از زیر گردون میخوری

५ (घ) उदारता, कृपणता ।

१६० दो०—यज्ञ तत्वके भेदको, जानो चाहे जोय ।
१-बनै हलाहल आपको, और हि सक्कर होय ॥

१६१ दो०—लेत डारि फल दारको, फलके हेतु लचाय ।
२-दान देत में अधिकतर, दानी झुकि २ जाय ॥

१६२ दो०—दूरस्थनि हित सुधि करन, साँचो साहस दान ।
३-यों तो डारैं द्रुम सबै, फल दल निज पगथान ॥

१६३ सो०—मेवा मीठी लाय, जो जगहित नहिं करि सकहि ।
४-सेवाछाय बिछाय, सरों बेतलों अवसकरि ॥

१६४ दो०—छोरि २ भाजत बसन, हम सूचीकी चाल ।
५-जग लागे बागे सियें, आपु उघारे हाल ॥

१६५ दो०—परदा ढांकन जगतसे, नीको कौन निचोल ।
६-औरन औगुन ढाँकि दृग, आपु उघारो डोल ॥

१६६ सो०—जिनके मन दरयाव,राव्रंक तिन दृगन सम ।
७-ऊंचनीच थलभाव, दुरोरहत जलके तरे ॥

१६७ दो०—सूर बीर सुइदीन जन, शरनलहैं जिहि पाहिं ।
८-काम चामको खरगते, अधिक वीरतामाहिं ॥

۵۹۹، سخاوت وبخل

۱۶۰
خواہی بسر معنی ایثار رسی
باخود ہلالی کن وباغیر شکری
(فیضی)

۱۶۱
لیتے ہیں ثمر شاخ ثمر ور کو جھکا کر
جھکتے ہیں سخی وقت کرم اور زیادہ
(ذوق)

۱۶۲
دور دستان را باحسان یاد کردن ہمت است
ورنہ ہر نخلے بپائے خود ثمر می افگند
(صائب)

۱۶۳
بمیوہ کام جہان گر نمی کنی شیرین
چو سرو و بید بہر حال سایہ گستر باش
(ایضاً)

۱۶۴
ہمچو سوزن دایم از پوشش گریزانیم ما
جامہ بہر خلق می دوزیم و عریانیم ما
(غنی)

۱۶۵
کدام جامہ بہ از پردہ پوشی خلق است
بپوش چشم خود از عیب خلق عریان باش
(صائب)

۱۶۶
شاہ و گدا بدیدۂ دریادلان یکیست
پوشیدہ است پست و بلند زمین در آب
(ایضاً)

۱۶۷
جو ہو پشت و پناہ زیردستان وہ بہادر ہے
جوانمردی ہیں افزون تیغ سے کار سپر پایا
(فرخ)

१६८ दो०—कहा भयो जो जगतकी, सम्पति धरी समेट ।
९—उठत नफातासों नहीं, बिनादान करभेट ॥

१६९ दो०—लोगनके तू दृगन सों, अपनी देन दुराउ ।
१०—हात भसम निजदानके, किस्सा मत कहि बाउ॥

१७० सो०—जिनहिं बिधाता बाम, दाता तिनहिं नदेहिं कछु।
११—देख भँवरको जाम, भरी नदी नहिं भरिसकहिं॥

१७१ दो०—दाता तुल्य उदार नहिं, लखदर याउ गँभीर ।
१२—इनकब दियोहुबाबको, तनक जामभरनीर ॥

१७२ सो०—कहाबैरियादाय, दानिनसों नभ कहतहै ।
१३—हाँलों देउँ झुकाय, तोडूं डारिजु देय फल ॥

१७३ दो०—ऐसो बैरी होत जग, बीर पुरुषको बीर ।
१४—मारे हूपै बाघको, मुँहभुरसत बेपीर ॥

१७४ दो०—ओछे लोगनको कहा, फल उदारता देय ।
१५—गेह प्रकासत दीप निज, मुँहकारो करिलेय ॥

१७५ दो०—मनमौनी हू जातहै, हित उपकारी दास ।
१६—कत गुलाम किरपन बनत,कनक रजत जगआस।

१७६ दो०—पाथरसे नहिं बाँटके, झुक्यो चहे तू जोय।
१७—न्यून अधिकके फेरमें, मतन तराजू होय ॥

دنیا کا زر و مال کیا جمع تو کیا ذوق
١٦٨ کچھ فائدہ بے دست کرم اُٹھا نہیں سکتا — ذوق

ریزش خود را ز چشم مردمان پوشیدہ دار
٦٩ در سخاوت خویش را افسانہ چون حاتم مکن — صائب

نصیبے نیست از اہل کرم برگشتہ بختان را
١٧٠ کہ ہرگز پُر نسازد کاسۂ گرداب را دریا — غ ی

رکھے ہے حوصلہ دریا کب اہل ہمت کا
١٧١ نہین یہ اتنا کہ بھر کاسۂ حباب تو دے — ذ ق

کیا دشمنی ہی اہل کرم سے رکھے ہے چرخ
١٧٢ یان تک جھکاؤن شاخ ثمر ور کو توڑ دون — ا ہماً

یان تک عدو زمانہ ہے مرد دلیر کا
١٧٣ منہ جھلسین ہین شکار کیے پر بھی شیر کا — ا ماً

نفع فیاضی سے کم ظرفون کو کیا مثل چراغ
١٧٤ گھر تو روشن کر دیا پر خود سیہ رو ہو گیا — نا خ

چون باحسان میتوان آزادگان را بندہ کرد
١٧٥ از بخیلی بندۂ سیم و زر دنیا مشو — د ائب

بتنگ تفرقہ خواہی کہ منحنی نشوی
١٧٦ مشو بسان ترازو تو در پئے کم و بیش — افظ

१७७ दो०-जोरि २ संचय कियो, दियो न बिलसो आप।
१८-ज्ञानवानकी जानमें, यह कुकर्म औ पाप ॥

१७८ दो०-गगनकुपनतापै कमर, ऐसी कसी बनाय।
१९-ओस बिहीन मसौस कर, निरझर तपनित पाय।

१७९ दो०-किरपन धन बसनीकसत,ज्यों द्विज अंडअछेद।
२०-लगत पंख व्ययचाउ धन, जानत ना यहभेद ॥

१८० दो०-धन समेटि सूमहि मिलत, केवल चिन्त अहार।
२१-एक डंक तजि रहत कह, मधुमाखी सँगयार ॥

१८१ सो०-लीने मेरे प्राण, सूमनकी गुन कूतने ।
२२-उनके द्रव्य समान, अनरस माटीमें गड़यो ॥

५ (च) वैराग्य।

१८२ दो०-बनै अजानो जगतसों, अच्युत परचित सोय।
१-या सागरते कढ़तही, नर मुक्ताहल होय ॥

१८३ सो०-आनखसिख सो पूत, जिन धोये कर जगतसों
२-उनहि मिटावनछूत, मल २ न्हान जरूर नहिं ॥

१८४ सो०-मन बिरवापै वन्द, मतकरि विटप जहानसों
३-पौद लगाई मन्द, यह औरहि थल कारने ॥

باُمیدِ بہشتی نہ داد و نخورد
۱۷۷ خردمند داند کہ ناخوب کرد — سعدی

آسمان نے بخل پر اسدرجہ باندہی ہے کمر
۱۷۸ چشمۂ خورشید بھی محتاجِ شبنم ہوگیا — ناسخ

نیارد ممسک از ہمیان چو مرغ بیضۂ زر بیرون
۱۷۹ ازین غافل کہ آرد زر زشوقِ خرچ پر بیرون — غنی

روزیِ ممسک ز جمعِ مال تشویش است و بس
۱۸۰ انچہ میماند بزنبور عسل جز نیش نیست — صائب

مار ڈالا ممسکون کی قدر دانی نے مجھے
۱۸۱ مثلِ زر خاکِ کدورت مین مین مدفون ہوگیا — ناسخ

(۵) ترک دنیا

آشنائے حق شد آنکس کز جہان بیگانہ شد
۱۸۲ ہر کہ زین دریا برآمد گوہرِ یکدانہ شد — صائب

سراپا پاک ہین دہوئے جنھون نے ہاتھ دنیا سے
۱۸۳ نہین حاجت کہ وہ پانی ڈہلائین سر سے پاؤن تک — ذوق

دل در جہان مبند کہ این نونہال را
۱۸۴ از بہر سر زمین دگر سبز کردہ اند — صائب

१८५ सो०—दिव्यलोक थल देख, या बिरवा फल दारको ।
४—मतकरि पुष्ट बिशेष, नातो मांगी भूमि सों ॥

१८६ सो०—महि पर डारि बहार, आगेही पत झारसों ।
५—छोडत अपनोकार, मरद दूसरेपै नहीं ॥

१८७ सो०—जग अनुराग निवार, मैयाको निज दूध जो ।
६—तेरो दिव्य अहार, सोहू धौरे रँग रुधिर ॥

१८८ सो०—विषय वारितजि हंस, जो सूखै दुख मूलही ।
७—पावत फिर मधु अंस, पहिले दंश महूक सहि ॥

१८९ दो०—त्याग बिसन अहिफेनको, भलो घटाउ इलाज।
८—क्रम २ करिके मोचिये, जग सम्बन्ध समाज ॥

१९० सो०—अपने सदन मझार, होत भिखारिहु भूपहै ।
९—पग निज सीमापार,धरि जिन रहु अवनीसवनि॥

१९१ दो०—असकत वा सन्तोष बस, तज्यो नाहिं उद्योग ।
१०—पुरुषारथ आरत भयो, साहस लाग्यो रोग ॥

१९२ दो०—रनमें जो तनमें लगैं, भलेसुघाव अनेक ।
११—नीको लमैन खालपै, दाग ढालको एक ॥

१९३ दो०—रहे वसन सब शत्रुके, कांटनमें अरुझाय ।
१२—बन अभावते हौं न गिन, आगे पहुँचो जाय ।

عالم بالاست جائے این نہال بارور
١٨٥ رشتۂ خود در زمین عاریت محکم مکن — ہ ئب

بیش از خزان بخاک فشاندم بار خویش
١٨٦ مردان بہ دیگران نگذارند کار خویش — ا ہاً

ہر از جہان بہبر کہ غذائے لطیف تو
١٨٧ خون ست در لباس اگر شیر مادرست

ترک لذت کر دلا ہوئیجے نہ تاجھکو گزند
١٨٨ نوش تو پیچھے ہے پہلے نیش ہی زنبور کا — نا نٰ

ترک افیون را علاجے بہتر از تقلیل نیست
١٨٩ اندک اندک آشنایان جہان بیگانہ شو — صائب

درون خانۂ خود ہر گدا شہنشاہ ست
١٩٠ قدم برون منہ از حد خویش و سلطان باش — الیضاً

ضعف سے ہے نے قناعت سی یہ ترک جستجو
١٩١ ہین وبالِ تکیہ گاہ ہمت مردانہ ہم — غالب

در معرکہ صد زخم رسد گر بہ تنِ ما
١٩٢ زان بہ کہ بود داغ سپر بر بدنِ ما — غنی

اور مردون کے کفن کانٹون مین الجھے رہگئے
١٩٣ آگے صحرائے عدم کے بھی یہ عریان بڑہگیا — نا ر

५ (छ) जीवन, मरण, यश, रचना।

१९४ दो०-खोय खोज निज मरनते, प्रथम अमर होतात।
१-राखे किनके खोजनत, मौत जगतविख्यात ॥

१९५ सो०-प्रिय जीवन संसार, कुढ़ि २ गारन जोग नहिं।
२-मत जराउ यहतार, एतोदीरघहै कहाँ ? ॥

१९६ सो०-उमर घटावत तात, अमर होनकी घातमें।
३-वे मूरख मख्यात, चोरत काल जु आपनो ॥

१९७ सो०-रे दीपक नादान, परम बैस तुव एक निस।
४-रोय २ दे प्रान, चाहे हँसि २ काटिले ॥

१९८ दो०-चलति आयुको दियो तुहि,या लगि चपलतुरंग।
५-वेग एड़ करि पारहो, भवनद लहर उतंग ॥

१९९ सो०-असमन उठत तरंग, लखि २ सरित प्रवाहको।
६-बही जात एहिरंग, मम वयतरनी अहर निस ॥

२०० दो०-जीतवको परमानका, भवसागरमें मीत।
७-जल प्रवाहमें कोकरै, बुद बुदकी परतीत ॥

२०१ सो०-अहो भाउ परभाउ, बैर कहाँलों बाँधि गयो।
८-एकहि जल दरयाउ, बुदबुद और तरंगलों ॥

۵ (ز) زندگی و مرگ ناموری و تعمیر

بے نشان پہلے فنا سے ہو جو ہو تجھکو بقا
۱۹۴ ورنہ ہے کسکا نشان ذوق فنا نے رکھا — ذو ن

عمر عزیز قابل سوز و گداز نیست
۱۹۵ این رشتہ را بسوز کہ چندین دراز نیست — صا ب

عمر خود را کم بہ امید فزونی میکنند
۱۹۶ سادہ لوحانے کہ می دزدند سال خویشتن — الف ا

اے شمع تیری عمر طبیعی ہے ایک رات
۱۹۷ رو کر گذار یا اسے ہنسکر گذار دے — ذو ن

عمر رواں کا توسن چالاک اس لیے
۱۹۸ تجھکو دیا کہ جلد کرے پا نسے ایڑ تو — الف

دیکھ دریا کو میرے جبین یہ لہرائے ہے
۱۹۹ کشتی عمر میری یونہین بہی جائے ہے — الف أ

بحر فنا مین زیست کا کیا اعتبار ہے
۲۰۰ آب رواں پہ کیا ہے بھروسہ حباب کا — آبا

ہوئی ہے کیا ہی تعین سے دشمنی باہم
۲۰۱ نہین اگرچہ حباب اور موج آب جدا — نا

२०२ सो०—पूंछि करेजेतासु, करुवाई जग जियनकी ।
९—फरतबुराई जासु, एकोएक विनोद नित ॥

२०३ दो०—जग करुवो पयपानसे, लै पयदान तलक ।
१०—जनमघुटीमें घोट दुख, नरको देत फलक ॥

२०४ सो०—जीवनराखत ख्वार, लोक द्दगनमें पुरुषको ।
११—टूटतस्वाँसा तार, लोग उठावत कंधपै ॥

२०५ दो०—देहीके जग गेहमें, गहै देहयों पाय ।
१२—ज्यों माटीके मेलते, सलिल रेलथम जाय ॥

२०६ सो०—जौलों तनमें साँस, जीव जाय सुरलोक नहिं ।
१३—पाउँ दामकी फाँस, सो पक्षी क्यों उड़िसकै ॥

२०७ दो०—तन मन्दिररचि समय धन, वृथा गमावत लोग ।
१४—यह बन्दीगृह छुटनको, करत नाहिं उद्योग ॥

२०८ सो०—बदरी मत बिसराउ, निजकारजपरि नामतू ।
१५—मौत नींद चितलाउ, जगत कहानी कानदे ॥

२०९ दो०—अपने सत्ता भवनको, आँगन बिकट अभाव ।
१६—करलीजै व्यायाम नित, पैन होय छिटकाव ॥

२१० दो०—आये लाये करमके, बँधे धरमके जात ।
१७—अपने मन आये नहीं, चलेन आप बसात ॥

تلخیٔ زیست اُسکے کلیجے سے پوچھیے
۲۰۲ جسکی ہر اک خوشی کا نتیجہ ملال ہے — محشر

شیر سے تا شربت مرگ ایک سی تلخی ہی یان
۲۰۳ غم لگا کھانے وہین انسان جہان پیدا ہوا — ناسخ

زندگی چشم جہان مین خوار رکھتی ہے ولا
۲۰۴ دوش پر سب نے لیا جب آدمی بیدم ہوا — ایضاً

تن ساختہ پابند درین مرحلہ جان را
۲۰۵ ساکن کند آمیزش خاک آب روان را — غنی

ندارد رہ بگردون روح تا باشد نفس در تن
۲۰۶ رسائی نیست در پرواز مرغ رشتہ بر پا را — ایضاً

بیشود اوقات مردم صرف در تعمیر تن
۲۰۷ فکر آزادی ازین زندان ندارد ہیچکس — صائب

غافل مشو ز عاقبت کار خود غنی
۲۰۸ دل نہ بخواب مرگ کہ دنیا فسانہ است — غنی

خانۂ ہستی کا اپنے صحن ہے دشت عدم
۲۰۹ روز کر لیجے چہل قدمی مگر رخصت نہین — ذوق

لائی حیات آئی قضا لیچلی چلے -
۲۱۰ اپنی خوشی نہ آئے نہ اپنی خوشی چلے — ایضاً

:

२११ दो०-बदरी जब आये यहाँ, लाये कहथों संग ।
१८-ह्याँते तो ले जाउगे, जिय भरि लाख उमंग ॥

२१२ दो०-लाखन भूपतिह्वै मिटे, आली आली जाइ ।
१९-निस सराय जग सोयके, गही भोर उठिराह ॥

२१३ दो०-आये चढ़े समीरपै, जैसे सुमनसुवास ।
२०-माटीमें यों मिलिगये, ज्यों जल पावसमान ॥

२१४ दो०-गये द्वैक दिन फूलतो, जोबन सुखद दिखाय ।
२१-कलक होतउनकलिनको, रहैंनिपटकुम्हिलाय॥

२१५ दो०-जग अनित्यथों नित्यहै, मैं क्यों करूँ निदान
२२-मोबलायसे होय कछु, जम ले जैहै प्रान ॥

२१६ सो०-कियो मौतलाचार, नातर यह नरवर अटल ।
२३-अहंकार चितधार, गिनतो नहिं नारायनहु ॥

२१७ सो०-मैयाके उर होय, सम आदर सब सुतनको ।
२४-भूमि अंकमें सोय, राउ रंक कर एकपद ॥

२१८ दो०-को आयो संसारमें, रह्यो सदा जो होय ।
२५-प्रैवाको जानो रहत, सुयस कमायो जोय ॥

२१९ दो०-मरोताहिनाहिं जानिये, जाने दिये रचाय ।
२६-पुल मन्दिरबापी कुवाँ, बागतड़ाग सराय ॥

وان سے یان آئے تھے اے ذوق تو کیا لائے تھے
211 یان سے تو جائین گے ہم لاکھ تمنا لیکر (ذوق)

مٹے لاکھون شہنشاہان عالیجاہ ہو ہو کر
212 سرائے دہر مین شب آئے تڑکے چلدیئے سوکر (احمد)

چون بوئے گل آمدند بر باد سوار
213 بر خاک چو قطرہ ہائے باران رفتند

پھول تو دو دن بہار جانفزا دکھلا گئے
214 حسرت اُن غنچون پہ ہے جو بن کھلے مرجھا گئے

کیا جانین ہم زمانہ کو حادث ہے یا قدیم
215 کچھ ہو بلا سے اپنی کہ ہین فانیون مین ہم — ذوق

موت نے کر دیا ناچار وگرنہ انسان
216 یہ وہ خودبین تھا خدا کا بھی نہ قائل ہوتا — ایضاً

جا برابر ہے دل مادر مین ہر فرزند کی
217 رتبہ زیر خاک یکسان ہے گدا و شاہ کا — ناسخ

نیامد کسے در جہان کو بماند
218 مگر آن کزو نام نیکو بماند — سعدی

نمرد آنکہ ماند پس از وے بجاے
219 پل و مسجد و چاہ و مہمانسراے — ایضاً

२२० दो०-जस चाहत तो अवसही, सकल लोकहितलाग।
२७-पुल बनाउ मन्दिर विपुल, वापी बाग तड़ाग ॥

२२१ दो०-मन्दिर रचिबो छोरिकै, मन बनाउरे कूर।
२८-अनरस रजतजि कहा फल, खेलत धूसरधूर ॥

२२२ सो०-मनमन्दिर रचि साज, जो उठाय सँग जायलै।
२९-यों विनाशके काज, दरउठाउकै भीत चुनि ॥

२२३ सो०-रचिपचि साजो धाम, अवनीपै तो कहाफल।
२४-होते पूरन काम, काहू चित हित घर बसे ॥

६ आदरसत्कार।

२२४ दो०-शुश्रूषा संसारकी, निश्चय बाधक जान।
१-नबत जाहि देखो यहां, पायो तेग समान ॥

२२५ सो०-प्रानन लेहु बचाय, कोमल बनिके निठुरते।
२-भयविधिवेको नाय, मोती लों जल बुन्दको ॥

२२६ सो०-ज्यों बुदबल की गोट, घर अपनो खाली करैं।
३-जा बैरी सों चोट, होय तहाँ सो पाहुनो ॥

२२७ सो०-झुकि २ सीसा लेत, हँसि २ चसकलगायगर।
४-यह मद पान निकेत, है नाहीं थल ठसकको ॥

نام منظور ہے توفیق کے اسباب بنا
۲۲۰ پُل بنا چاہ بنا مسجد و تالاب بنا — ذوق

بخود سازے بدل کن ای سیہ دل خانہ سازی را
۲۲۱ کہ جز گرد کدورت نیست حاصل خاکبازی را — صائب

چاہیے تعمیر دل جو ساتھ اُٹھا لیجائیگا
۲۲۲ یون خرابی کے لیئے دیوار اُٹھایا در اُٹھا — ناسخ

یہان مکان بنایا تو کیا کیا ہمنے
۲۲۳ مزا تھا جب کہ کسی دل مین اپنا گھر ہوتا — سحر

٦ (الف) تواضع۔

تواضع اہل دنیا کی یقینی قاتل جان ہے
۲۲۴ مثال تیغ دیکھا ہمنے اُسکو جسکو خم پایا — قبول

ما بہ نرمی جان ز دست سخت گیران می بریم
۲۲۵ بیم سفتن نیست چون دُر قطرہائے آب را — غنی

جائے خود چون مہرۂ شطرنج خالی میکنیم
۲۲۶ دشمن ما میشود در خانۂ ما میہمان — ایضاً

جھک جھک کے شیشے ملتے ہین ہنس ہنس کے جام سے
۲۲۷ یہ میکدہ مقام نہین ہے غرور کا — ناسخ

२२८ दो०—नरन नवावत जगतमें, गुन कुलीनतासील।
५—कसत वहे तरवार है, जाको पिंड असील॥

२२९ दो०—आदरशील सुहोत नर, जिहि उपकार उदार
६—लसत डारि फलदारमें, फलसों फूल अगार॥

२३० दो०—दीननसों नविकै मिलत, जिनको विभवउदार
७—देखौ भूमि प्रनामको, झुकिरह्यो गगन अपार॥

६ (अ) अभिमान, दैन्य।

२३१ सो—जगविलासके धाम, लसै प्रकाश सुहावनो।
१—जब कंदील ललाम, लटकै गर्वी सीसकी॥

२३२ सो०—कहत सुराही बैन, निहुरि कानमें जायके।
२—लचत नारि तिन ऐन, सीस उठावत जो यहाँ॥

२३३ सो०—तितर वितर भयो फूल, हाँसीके फल बागमें
३—अरीकली जिन भूल, ह्याँ उपहास भलो नहीं॥

२३४ सो०—अन्त जाय हलकाय, ज्ञानवानकी दृष्टि में।
४—पानीपै उतराय, जो बुदबुद की भाँति नित॥

२३५ दो०—अभिमानी पाइनपरे, ह्वै जिन बैठि निचीत।
५—अगि न परै चाहै जहाँ, निज गुण तजै नमीत।

۲۲۸ خمیدہ کرتا ہے انسان کو جوہر شرافت کا
اصالت جس مین ہوتی ہے وہی تلوار کستی ہے

۲۲۹ وہ خلق سے پیش آتے ہین جو فیض رسان ہین
ہے شاخ ثمردار مین گل پہلے ثمر سے — ذوق

۲۳۰ خاکسارون سے ملا کرتے ہین جھک کر سربلند
آسمان پیشِ زمین بہر تواضع خم ہوا — ناسخ

(۶) الف سرکشی و فروتنی

۲۳۱ جہان ہے خانۂ عشرت جبھی ہوا اسکا فروغ
کہ لٹکے اسمین سرِ پرغرور کی قندیل — ذوق

۲۳۲ گویا بزبان شیشہ نہانی بگوش جام
ہر کس کہ سر کشد بجہان سرنگون شود — غنی

۲۳۳ گل پریشان ہوا ہنس کر کے چمن مین آخر
دیکھ اے غنچہ یہان خندہ زنی خوب نہین — ذوق

۲۳۴ درچشم اہل بینش آخر سبک درآئی
گر ہمچون حباب خواہی بر روی آب رفتن — غنی

۲۳۵ چو سرکش بر سر افتادگی آید مشو ایمن
کہ کار خویش خواہد کرد آتش ہر کجا افتد — ایضاً

२३६ दो०—कोमलता अरु नेहते, अभिमानी वश होय ।
६—तेल तूलके मेल फँसि, बँधति दिया की लोय ॥

२३७ सो०—जबर न लहै करार, जेर रहै धीरज धरे ।
७—याके साखीदार, चाकीके दोउ पाट हैं ॥

२३८ दो०—बदरी कुत्सित दृष्टिसे, यहां देखिये काहि ।
८—सबही हमसों अधिकहैं, थोरो कौन दिखाहि ॥

२३९ सो०—चढत हमारो रंगु, आखिरखिलि जग अखिलै
९—परे पुहुमिपै पंगु, जोहू मेंहदीपात सम ॥

२४० सो०—लेहु पतन व्रत धारि, अधम धूर ग्रह छोर यह।
१०—इनहीं परन पसारि, ओस जात उड़ि सूरपै ॥

२४१ सो०—पहुँच तरनिलों जाय, ओस गिरपर निकारने ।
११—देखो तो चितलाय, कहँ सों कहँलों गम्यहे ॥

२४२ दो०—नाउँ होय ऊँचो बहुत, आपुन नीचे होत ।
१२—तारा सब कोऊ कहत, जलपतालके सोत ॥

२४३ दो०—पाटी सो जो बनिरहे, ऊँचे पद पै जाय ।
१३—नदी नीर नीची सदा, ऊँचो तीर दिखाय ॥

۲۳۶ توان از چرب و نرمی کرد اسیر خویش سرکش را
که تار شمع دایم شعله را زنجیر پا باشد — غنی

۲۳۷ زبردست اضطرابے زیردست آسودگی دارد
دو شاهد بر کلام من دو سنگ آسیا باشد — ایضاً

۲۳۸ اے ذوق کسکو چشم حقارت سے دیکھیے
سب ہم سے ہین زیادہ کوئی ہم سے کم نہین — ذوق

۲۳۹ آب و رنگ ما بعالم عاقبت گل میکند
بر زمین هر چند چون برگ حنا افتاده ایم — غنی

۲۴۰ افتادگی گزین که ازین خاکدان پست
شبنم بآفتاب بدین بال و پر رسد — صائب

۲۴۱ شبنم بآفتاب رسید از فتادگی
بنگر که از کجا بکجا میتوان شدن — ایضاً

۲۴۲ نام یون پستی مین بالاتر ہمارا ہوگیا
جسطرح پانی کنوئین کی تہ مین تالا ہوگیا — ذوق

۲۴۳ دیکھا تو خاکسار کا رتبہ بلند ہے
دریا ہے پست ساحل دریا بلند ہے — اعظم

७ सांसारिकगति ।

२४४ सो०—जैसी होय चितौन, अचरज तस संसारमें ।
१—अधिक दिखै या जौन, चकित चित्तताकों अधिक।

२४५ दो०—कहुँ कलिका कहुँ सुमनहैं, कहुँ कुम्हिलाये फूल।
२—हमहिं कुतूहल नितनयो, जग फुलवारि अमूल ॥

२४६ दो०—उपवन लसत सुहावने, रंग बिरंगे फूल ।
३—लौट फेर है जगत में, बदरी शोभा मूल ॥

२४७ दो०—साँझ सकारे नितनई, जगमें स्थिति होय ।
४—निस भर बसति सराय जो, बासर ऊजर सोय ॥

२४८ दो०—मतवारो इक एक नर, सुराबिस्मरन फूल ।
५—यह मीनाई गगनप्रति, ग्रह कलाल निरमूल ॥

२४९ सो०—जे तेहैं उनमाद, मदिरापान समान सब ।
६—होय जात दुस्स्वाद, बढ़त अपरमित बिसन जब॥

२५०दो०—नरचित लाग्यो रहतहै, नित चिन्ता दरबार ।
७—मेरे लेखेहै सभा, सूने भौन मँझार ॥

२५१ सो०—तन मन छायो पाप, नहिं अधीन सो देवके ।
८—करन लोक सन्ताप, है कोटी अधिकारकी ॥

۷- کیفیت دُنیا

۲۴۴
حیرت ہر کس دراین عالم بقدر بینش است
ہر کہ بیناتر درین ہنگامہ حیران بیشتر
صائب

۲۴۵
کوئی غنچہ ہے کوئی گل ہے کوئی پژمردہ ہے
دیکھتے ہین ہم تماشہ گلشن ایجاد کا
ناسخ

۲۴۶
گلہاے رنگ رنگ سی ہے رونق چمن
اے ذوق اس جہانکو ہے زیب اختلاف سی
ذوق

۲۴۷
مختلف احوال دنیا کا ہے ہر شام سحر
شب کو آبادی سرا مین دنکو ویرانہ رہا
بسمل

۲۴۸
بادۂ غفلت سے ہر فرد بشر سرشار ہے
چرخ مینائی بھی رشک غانۂ خمار ہے
عالی

۲۴۹
جتنے ہین یان فرے روش نشۂ شراب
ہوجاتے ہیزہ ہین جو بڑہ جاتے حدسی ہین
ذوق

۲۵۰
ہے آدمی بجاے خود ایک محشر خیال
ہم انجمن سمجھتے ہین خلوت ہی کیون نہو
غالب

۲۵۱
مجبور حق نگردد آلودہ معاصی
بدکردن خلایق برہان اختیار ہست
صائب

२५२ दो०—नरपै हाथ पसार मत, हरिको द्वार बिसार।
९—प्रीतमको गिल्ला करै, गैरन जाय गँवार ।

२५३ दो०—सहि २ हिमहित कालगति, रहिनकरेजे आहि।
१०—जो द्रुमदह्यो तुसारलगि, धुवाँन निकसति ताहि॥

२५४ सो०—चौथे पनमें आय, नरकी मति कटि जात है।
११—दांतन बिन मुखपाय, मैं आपै बालक गिनूँ ॥

२५५ दो०—बुरे परोसीसे सदा, सबकाहू दुख होय ।
१२—अधर डसे जो दशनतो, कौन अचंभो तोय ॥

२५६ दो०—होय परोसीको जुहित, नीको सो उद्योग ।
१३—दृगन नींदकारन करन, करत कथा उपभोग ॥

२५७ दो०—करत मनोरथ तिनहिंके,करत रहत कछु जोय।
१४—राखे हैं कर तारने, करम करम गुन पोय ॥

२५८ सो०—जा कारजपै कोय, साहस सों बांधे कमर ।
१५—चाहै सूलहि होय, छोरै फूल बनायकै ॥

७ (अ) सुखदुःख।

२५९ दो०—भलो दुःख सो जानिये, पाछे करै हुलास ।
१—वा सुखसों जो अन्तमें, देय निरन्तर त्रास ॥

ز در حق به در خلق مبر حاجت خود
۲۵۲ شکوه از یار با غیار نمی باید کرد — صائب

نماند از سر دہر ہیاے دوران در جگر آہم
۲۵۳ درختی را کہ سر ہا سوخت دودش بر نمی آید — ایضاً

آدمی در عہد پیری بے خرد گردد غنی
۲۵۴ میشمارم طفل خود را بخت تا دندان مرا — غنی

بجز آزار از ہمسایۂ بدکس نمی بیند ز تو
۲۵۵ غنی استادگی در لب گزیدن نیست دندان را — ایضاً

سعی بہر راحت ہمسایگان کردن خوش است
۲۵۶ بشنود گوش از براے خواب چشم افسانۂ — ״

کچھ کرنے والے ہوتے ہین مقصد مین بہرہ ور
۲۵۷ رکھا ہے کارساز نے ہر فعل مین اثر — احمدی

بہر کارے کہ ہمت بستہ گردد
۲۵۸ اگر خارے بود گلدستہ گردد — سعدی

۷ (الف) رنج وراحت

غمے کز پیش شادمانی بری
۲۵۹ بہ از شادئی کز پسش غم خوری — سعدی

२६० दो०-कहा जगत आराममें, होत न सुमन विलास ।
२-है बिहारके जोगपै, नहिं बिहार अवकास ॥

२६१ सो०-देखहु बदरी सोच, कष्ट मूल संकोचहै ।
३-जिन नितज्यो संकोच, तिन पायो आराम फल

२६२ दो०-बदरी भव सुख दुःखको, हरष सोच मतमान
४-कबहूँ वह कबहूँ यहो, रीत यहाँकी जान ।

२६३ सो०-दुखअरुसुखके काल,इहि जग होत समान न
५-निसभर रोवै लाल, दिया हँसे ऊषा छिनक ॥

२६४ सो०-सुख सोवन कहें लोग, जानो सीस विकारसो ।
६-जाहि लगे यह रोग, सो सेवै बिस्तर सदा ॥

२६५ सो०-जो सुख नहिं ठहराय, सो पूँजी पछतावकी ।
७-मेंहदी सुरंग बँधाय, आखिरकर मींडन परै ॥

२६६ सो०-दुख न बिसर जन होय,मनको सुखके हँसनसों ।
८-बिहँसत बदन न तोय, मीठो होय गुलाबको ॥

२६७ दो०-कहूँ रंग आरामको, नहिं जगके आराम ।
९-माली सालै सुमन उर, वधिक कीरको बाम ॥

२६८ सो०-मोद सुरा नहिं लेस, या माटीके माठ घर ।
१०-यह धुनि उठति बिसेस,रीते नरगिस जामसों ॥

اس گلستان جہان مین کیا گل عشرت نہین
۲۶۰ سیر کے قابل ہے یہ پر سیر کی فرصت نہین — ذوق

اے ذوق تکلف مین ہے تکلیف سراسر
۲۶۱ آرام سے ہے وہ جو تکلف نہین کرتا — ایضاً

ز رنج و راحت گیتی مرنجان دل مشو خورم
۲۶۲ کہ آئین جہان گاہے چنین گاہے چنان باشد — سعدی

مدت شادی و غم نیست برابر بجہان
۲۶۳ گریہ شمع شبے خندہ صبح است دمے — غنی

خواب راحت درحقیقت مایۂ دردسر است
۲۶۴ ہر کہ دارد این مرض پیوستہ صاحب بستر است — ایضاً

عیشے کہ کمی ماند سرمایہ افسوس است
۲۶۵ این دست حنا بستہ برہم زدنی دارد — 〃

نمی توان غم دل راز خندہ بیرون برد
۲۶۶ ز خندہ روئی گل تلخی از گلاب نرفت — صائب

رنگ عشرت باغ عالم مین نظر آتا نہین
۲۶۷ گل کو گلچین کا خطر بلبل کو غم صیاد کا — ناسخ

نشانے نیست رخ خانہ خاک ازمی عشرت
۲۶۸ ز جام خالی نرگس ہمین آواز می آید — غنی

२६९ दो०—सुख मदिरा तवते भई, करुई बिसवा बीस ।
११—गरल पियनको गगनको, कियो कटोराईस ॥

२७० दो०—वा घरमें आनन्दको, रहै सदादर बन्द ।
१२—जा घर उठति तियानकी, नित उठि सदा बिलंद।

२७१ सो०—जग माटी ग्रह चित्त, खेम आस मत राखतू ।
१३—जान गराउ निमित्त, घरि यारची बिरंच यह ॥

२७२ दो०—चाहे फिरत खगोलहै, औ चाहे भूगोल ।
१४—पै नहिं ह्यां बिसराम थल,हमहि मिलनको डौल॥

२७३ सो०—जनम्यो जब दुखपाय, मैया हीकी कूखतें ।
१५—क्यों नाहक भटकाय, सुखकारन ह्याँ सुख कहाँ।

२७४ दो०—बिधना उनके सीसपै, डारन लाय पहार ।
१६—पाहनसम जिनको दुसह, पुहुप पँखुरिया भार॥

२७५ दो०—काल अधिक दुख दरदकी, संभावना जुहोय ।
१७—आजहि तिहिको खेइबो, कौन बतायो तोय ॥

२७६ सो०—होते नाइहि धाम, सोग पीरके रंग जो ।
१८—गगन न हो तो श्याम, औ पिरथी पीरी नहीं ॥

२७७ दो०—विषय विषे मनकी लगन, सकल सोगकी मात।
१९—हम सनहित सम्बन्धकरि,जनति बिपतिकुलतात

٢٦٩ پوچھیں گر مجھسے مئے عیش ہوئی کب سی تلخ
کہوں جسدن سے فلک کاسۂ زہراب بنا — ذوق

٢٧٠ در خورمی بر سرائے بہ بند
کہ بانگ زن ازوے برآید بلند — سعدی

٢٧١ از خاکدان دہر سلامت طمع مدار
این بوتہ را برائے گداز آفریدہ اند — صائب

٢٧٢ خواہ پھرتا ہے فلک اور خواہ پھرتی ہے زمین
پر ہمارے واسطے یان منزل راحت نہین — ذوق

٢٧٣ بطن مادر ہی سے جب پیدا ہوا تکلیف سے
یان کہان راحت کہ تو کرتا ہے راحت کی طلب — ایضاً

٢٧٤ سر پہ پہاڑ اُن کے نہ اے آسمان گرا
جو برگ گل کو سمجھین کہ سنگ گران گرا — ناسخ

٢٧٥ فردا چو غم زیادہ زامروز میرسد
امروز خوردن غم فردا چہ حاجت است — صائب

٢٧٦ جو زنگ رنج و ماتم کا یہان نمود ہوتا
تو زمین نہ زرد ہوتی نہ فلک کبود ہوتا — ذوق

٢٧٧ دلبستگی ست مادر ہر ماتمے کہ ہست
می زاید از تعلق ما ہر غمے کہ ہست — صائب

७ (क) अपचय, उपचय ।

२७८ दो०—चूर २ आपहि करहि, सोही पूरो होय ।
१—दरश करावन बालशशि, कर उठाय सब कोय ॥

२७९ दो०—नहीं दीनता प्रकटते, बढ़ि अधूरकी पूर ।
२—अन पैराको कर गहत, कर उठाइ बो कूर ॥

२८० दो०—बदरी अवनति डारिसे, बीनो उन्नति फूल ।
३—साँस अधोगति बाँसते, कढ़त उच्च रस मूल ॥

२८१ दो०—पूनोंसे बढ़ दूजके, चाउ चन्द्रको होय ।
४—गाहक नहिं संसारमें, पूरन गुनको कोय ॥

२८२ सो०—मुख कलंक नहिं जाय, सोरह कला मयंककर।
५—कलाकुशलता पाय, सरयो न एको काज मम ॥

२८३ सो०—अपचय उपचय साथ, रहत गगन मंडल तरे।
६—सकल कला कर नाथ, कुढ़ि २ होत अदर्श सो॥

२८४ दो०—हमें अपूरन होनको, मा कारन अभिमान ।
७—जगमें प्रथम बढ़ाउ जिहि, ताहि घटाउ निदान ॥

۷ دب، کمال و زوال

۲۷۸ ہر کہ خود را بہ تمامی شکند او ست تمام
ماہ را زین سبب انگشت نما ساختہ اند — صائب

۲۷۹ نیست ناقص را کمالے بہتر از اظہار عجز
دستگیر ناشنا در دست بالا کردن است — ایضاً

۲۸۰ توان ز شاخ تنزل گل ترقی چید
نفس بہ نے چو فرو شد بلند میگردد — غنی

۲۸۱ مشتاق سب ہین بدر سے افزون ہلال کے
دنیا مین قدر دان نہین اہل کمال کے — ناسخ

۲۸۲ ببُعد راہ سیاہی ز روئے ماہ نرفت
نیامدست بکار سے کمال خویش مرا — غنی

۲۸۳ ہر کمالے را زوالے ہست در زیر فلک
ماہ ناقص بدر تا گردید کاہیدن گرفت — صائب

۲۸۴ ہم اپنی بے کمالی پہ نازان ہین اسلیے
جو صاحب کمال ہے اسکو زوال ہے — عاجز

७(ख) दया, निष्ठुरता।

२८५ सो०—यहाँ बडी सौगात, कर गहिबो आधीनको।
१—लेहु असीसें तात, जब पावहु दुखियानकीं ॥

२८६ दो०—करत बीनती धनिनसों, "सेवाको तय्यार"।
२—दीनन सोंहू पूंछिये, जब तब "का दरकार" ॥

२८७ दो०—हरष हँसन मृदु कामना, तात तोय जो होय।
३—पोंछत रहियो प्यार कर, अँसुवापर दृग जोय ॥

२८८ दो०—कर असीसपर तापते, श्रीप्रासाद दृढ़ाय।
४—पुख्ता बुढिया कूटिका, किसरा महल सहाय ॥

२८९ दो०—केवल बाहु प्रताप बल, सरै न कोई कार।
५—राजश्रीके पदरको, कर असीस रखवार ॥

२९० दो०—राजश्रीकी नींउ खुद, खोदे निठुर नरिन्द।
६—परसेना निज प्रजाको, करै कुसासक निन्द ॥

२९१ दो०—निज जनपै दुनियादया, भूलि करै नहिं तात।
७—अगिन होत्री गात कब, राखन अगिन सिरात ॥

२९२ दो०—अति कठोर जी जानिये, बाहिर कोमल जोय।
८—ज्यों कपासमें पासही, दूरो बिनौरो होय ॥

۱۷ ج، ترحم وسنگدلی

۲۸۵	مکرم جنس ہے یان دستگیری نیجانون کی خریدا کر ملین جتنی دعائین ناتوانون کی	احمدی
۲۸۶	منعمون سے کہتے ہو حاضر پئے خدمت ہین ہم بیکسون سے بھی کبھی پوچھا کرو کیا چاہیے	ایضاً
۲۸۷	ہو اگر دلکو شکر خندِ طرب کی آرزو غیر کے آنسو بدِ شفقت سی پونچھا چاہیے	”
۲۸۸	قصر دولت پایدار از دست ارباب دعاست پشتبان طاق کسری کلبۂ زال است و بس	صائب
۲۸۹	بزور بازوے اقبال کارے بر نمی آید نگہ دارد مگر دست دعا دامان دولت را	ایضاً
۲۹۰	بدست خود کند بیداد گر بنیاد دولت را ستمگر لشکر بیگانہ سازد خود رعیت را	”
۲۹۱	دنیا باہل خویش ترحم نمی کند آتش امان نمی دہد آتش پرست را	”
۲۹۲	سنگین دلست ہر کہ بظاہر ملایم است پنہان درون پنبہ نگر پنبہ دانہ را	غنی

२९३ सो०-गोफनलों मन होय, जाको पाहन निरदई ।
९-लरैं परस्पर कोय, तब सो नाचै हर्ष सों ॥

२९४ सो०-जो पाहन चित होय, छातीते तिहि काढ़ नित।
१०-या मारगमें तोय, गोफन राह बतायहै ॥

७(ग) मनुष्यपरीक्षा, गुणग्रहण ।

२९५ दो०-भली कही यह सोचिकै, काहू चतुर सुजान ।
१-भागवानकी आंखको, भाग रसाइन जान ॥

२९६ दो०-निरखत प्रथमबनायकै, दरपन दरपन कार ।
२-अपनेहू गुण दोषको, परखत गुणी विचार ॥

२९७ दो०-गुणकी जाने खाग कब, जो आपहि गुण हीन।
३-गुण गाहक वे होत जो, सकल कलान प्रवीन ॥

२९८ दो०-मोती कूते जौहरी, कंचनकसे सुनार ।
४-दुर्लभ नागर पुरुष सो, जो परखैं नरनार ॥

२९९ दो०-सज्जनता गुण मिलतहै, नरहि मानसनमान ।
५-यह ओछे मन होय नहिं, ओछे तन नहिं हान ॥

३०० दो०-सज्जनता कछु और है, विद्या औरै बात ।
६-सुवा पढ़ायेहु विविधविधि, रहत विहंगम तात ॥

۲۹۳ هر که مانند فلاخن دل سنگین دارد
بر قصد آن دم که کسی را بکسی جنگ شود — غنی

۲۹۴ بود از سینه بیرون کردنی آن دل که سنگین است
دلیل راه خود گردان درین وادی فلاخن را — ایضاً

۷ (د) مردم شناسی و قدردانی

۲۹۵ چه نیکو زند این مثل هوشمندان
که اکسیر بخت است چشم بلندان — ابوالفضل

بنا کے آئینہ دیکھے ہے پہلے آئینہ گر
ہنرور اپنے بھی عیب و ہنر کو دیکھتے ہیں — ذوق

۲۹۷ جسمیں نہووے جوہر جوہر شناس کب ہے
جو صاحب ہنر ہے وہ ہی ہنر کو پرکھے — سودا

۲۹۸ گوہر کو جوہری اور صراف زر کو پرکھے
ایسا نکوئی دیکھا وہ جو بشر کو پرکھے — ایضاً

۲۹۹ آدمیت سے ہے بالا آدمی کا مرتبہ
پست ہمت یہ نہووے پست قامت ہو تو ہو — ذوق

۳۰۰ آدمیت اور شے ہے علم ہے کچھ اور چیز
کتنا طوطے کو پڑھایا پر وہ حیواں ہی رہا — ایضاً

३०१ दो०-मलिन बहिर गति देखि मम, निन्दक चखमत तानि
७-फञ्यो पिधान करहि कहा, असि असीलकी हानि ॥

३०२ सो०-साखा बिसवाबीस, रुख फेरै निजमूल तन ।
८-देखहु अर्पै सीस, फल दल तरवर चरनपै ॥

३०३ दो०-औगुन औरनके गिनै, आगे तेरे लाय ।
९-औगुन तेरे सो सही, और न पै लै जाय ॥

३०४ दो०-होय नेकतू और बद, बदरी कहै जहान ।
१०-वासों भलो कि होय बद, करैं नेक अनुमान ॥

३०५ दो०-सज्जन जनको आदिते, मान घटत खल बीच ।
११-सुरगुरु ते ऊंचो रहत, सदा सनीचर नीच ॥

७ (घ) शत्रु, मित्र ।

३०६ दो०-निपुण सखा सम होतहै, जोड़ा कब निर्दोस ।
१-बसि गुलाब सँग आब बहु, पावै मणिते ओस ॥

३०७ सो०-भार रहित नित होय, छाँई जदपि पहारकी ।
२-क्षुद्र गुरुनते कोय, महिमा सम्पादै नहीं ॥

३०८ दो०-ऐसे नरते चित्तमें, अनुखन मानै कोय ।
३-चितवन परखै ताहि की, सखा जाहि को होय ॥

با چشم کم مبین من ظاهر ذلیل را
۳۰۱ عیب از غلاف کهنه چه تیغ اصیل را

هر کجا فرع است آرد رو به اصل خود غنی
۳۰۲ سر به پای نخل آخر میگذارد برگ و بار — غنی

هر که عیب دیگران پیش تو آورد و شمرد
۳۰۳ بیگمان عیب تو پیش دگران خواهد برد — سعدی

نیک باشی و بدت گوید خلق
۳۰۴ به که بد باشی و نیکت بینند — ایضاً

ازل سے قدر نیکوں کی ہے کمتر
۳۰۵ زحل بالا نشین مشتری ہے — عالی

۷ (۵) دوست و دشمن

به از همصحبت شایسته اکسیر نمی باید
۳۰۶ ز قرب لاله از یاقوت رنگین تر بود شبنم — صائب

سایه گر سایهٔ کوه است سبک میباشد
۳۰۷ کی تمکین نکند سفله از ارباب وقار — غنی

وہ شخص بار خاطر ہرگز نہو کسی کا
۳۰۸ جسکا ندیم ہووے اُسکی نظر کو پرکھے — سودا

३०९ दो०—जन मन सुख संचयभलो, संचयभलो न कोस।
४—निधनभलो जन होनसे, पीडित हत सन्तोस ॥

३१० सो०—देख ! आस जिय माँहिं,राखिन सम्पति मीतकी।
५—सीप अधर तर नाहिं, पानी मोतीमें घनो ॥

३११ सो०—अपनेसे उपकार, जान पराये को भलो।
६—जलनिधि माँझ अगार, पियति सीपपै अनतपय ॥

३१२ सो०—कारज अटके तात,आस राखि जिन स्वज़नकी।
७—खोलन नखन सकात, पोरनपै गाँठें परीं ॥

३१३ दो०—यू सुफ संग सहोदरन, करी सुजग विख्यात।
८—और कुटुम्बिन सों कहा, आसकरो पुनि तात ॥

३१४ दो०—भले बुरे में दीजिये, प्रतिरोधिनको अंग।
९—छोर न उनहिं उतारमें, छाक्यो जिनके संग ॥

३१५ सो०—सहवासिन सँग मान, हेल मेल अतिमति करै।
१०—खटकत शूल समान,लोचनमें अटकत पलक॥

३१६ सो०—गाफिल संगति पाय, नष्ट होत कर तूत सब।
११—सोय एक पग जाय,सकहि दूसरो फिर न चलि॥

३१७ सो०—पालो डारिन मोर, गगना हिम हित मीत सों।
१२—द्रुम तुसार ज्यों खोर,त्यों जरि जैहों बात लगि॥

دل دوستان جمع بہتر کہ گنج
۳۰۹ خزانہ تہی بہ کہ مردم بہ رنج — سعدی

دیکھ ہمصحبت کی دولت سے نہ رکھ چشم اُمید
۳۱۰ لب صدف کے تر نہیں ہر چند گوہر میں ہے آب

فیض از بیگانہ میخواہیم نے از آشنا
۳۱۱ چون صدف در بحر آب از جای دیگر میخوریم — غنی

کشاد کار خود نتوان طمع از آشنا کردن
۳۱۲ کجا ناخن تواند بند از انگشت وا کردن — ایضاً

یوسف مصر شنیدی کہ ز اخوان چہ کشید
۳۱۳ چہ توقع ز عزیزان دگر باید داشت — صائب

در نوش و نیش کن بحریفان موافقت
۳۱۴ با ہر کہ ہم پیالہ شدی ہم خمار باش — ایضاً

مکن با دوستان از آشنائی اختلاط افزون
۳۱۵ در آید چون درون دیدہ مژگان خار میگردد — غنی

رفیق اہل غفلت ہر کہ شد از کار میماند
۳۱۶ چو پاے خفتہ پاے دیگر از رفتار میماند — ایضاً

سرد مہروں سے فلک ڈال نہ پالا کہ بن آگ
۳۱۷ نخل سرمازدہ کی طرح سے جل جاؤں گا — ذوق

३१८ सो०-भये भावसों कोय, जगत ग्रंथ नहिं एक मन
१३-मनके अखरा दोय, रहत परस्पर अनमने ॥

३१९ सो०-मधुलों मधुर दिखाय, स्वारथ साधत हलाहल
१४-बैरी मृदु बतराय, बैठे जिन बेखटक है ॥

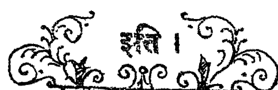
३२० सो०-बैरी नवैजु आय, निश्चय दुख फल लाय है ।
१५-फरसा लागे पाय, फरस देय करि तरवरहि ॥

३२१ दो०-बैरी सों नय विनयकरि, बचहिंन प्रान गँवार।
१६-लच्यो गात बुढरानको, सकहिंन जम कोटार॥

३२२ सो०-बदरी सुख मत मान, बैरीके विस्मरनको ।
१७-लखि कमानकी बान, तकति निसानो पीठदै ॥

३२३ सो०-अरि घर कबहुँ न जाय,जीदानी जगको जदपि।
१८-परतहि तुरत बुझाय,अनल सुधा जल विमलहू॥

३२४ दो०-दीप अनूप प्रताप अरि, कबधों सकहि बढ़ाय।
१९-मानिक अनल कदापि नहिं,जलके भय सकुचाय



۳۱۸ — ذوق

صفحۂ دہر پہ اکدل نہوا ایک سے ایک
دل کے دو حرف ہین سو وہ بھی جدا ایک سے ایک

۳۱۹ — صائب

میکند زہر ہلاہل کار خود را انگبین
از گزند دشمن شیرین زبان غافل مباش

۳۲۰ — غنی

نبود گل تواضع دشمن بجز گزند
پا بوس تیشہ افگند انبا نہال را

۳۲۱ — ایضاً

نتوان بر و ز دشمن بتواضع جان را
قامت خم نہ رہاند ز اجل پیران را

۳۲۲ — ,,

ہر چند تغافل کند ایمن مشو از خصم
پیوستہ بود پشت کمان سوئے نشانہ

۳۲۳ — ,,

مرو در بزم دشمن گرچہ جان بخش ست عالم را
کہ میرد آتش ار در چشمۂ آب بقا افتد

۳۲۴

ضرر پہونچا سکے کب شمع اقبال کو دشمن
نہووے آتش یاقوت کو اندیشہ پانی کا

تمام شد



खेमराज श्रीकृष्णदासके
"श्रीवेंकटेश्वर" छापखानेमें
छपा - मुंबई.

टिप्पनी।

मंगल, हरिस्तुति।



नं

—'जल' यह शब्द मूलसे अधिक है इस चरणको यदि 'जल थल व्योमअपार' इति, पढा जाय तो भी उत्तम है.

—'अजाँ'(اذان)मसजिद(مسجد)में निमाज (نماز)पढनेके हेतु लोगोंके एकत्र करनेके निमित्त जो पुकार मुल्ला करता है.

—'मुहर' असरफी(اشرفی)मछलीके छिल्के तदाकार होतेहैं.

१ —'छवि'—प्रकाश—'भाश्छवि द्युति दीप्तयः' इत्यमरः

" 'तूर'(طور)पहाड, विशेषतः 'शाम' देश (Asiatic Turky) का 'सेना' سینا (Sinai)नाम पर्वत जिसपर परमेश्वरने तडित स्वरूपमें हजरत मूसा पैगम्बर حضرت موسیٰ پیغمبر (Moses) को दर्शन दियेथे; उस दुःसह

पृ० नं०

तेजके कारण 'मूसा' अचेत होगये और पर्वत जलकर सुरमा बन गया—यहाँ कवि का तात्पर्य यह जान पडता है कि श्री गंगा की तरंग छवि अवलोकन करि जीव आनंद प्रवाहमें निमग्न हो जाता है और उस तेजसे जलकर मनुष्यके अघ शैल तत्क्षण भस्म हो जाते हैं.

४ १२—'गगन'—फारसी उर्दू कविगण 'आस्मान' 'चर्ख़' 'फ़लक़' इत्यादि गगनवाची शब्द 'दैव' के अर्थ में प्रयोग करते हैं. कारण यह ज्ञात होता है कि जो भी, हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह(حضرت محمد رسول اللہ)ने ज्योतिषशास्त्र मिथ्या बताया तो भी कदाचित् किसी पूर्व विश्वासका प्रमाणदायी यह वाक् संप्रदाय अभीतक प्रचलित है.

अबके यूरुपीय सिद्धांत तथा हमारे जूने शास्त्रप्रमाण के विरुद्ध इन लोगोंका यह कथन था कि गगन एक पदार्थ है जिसके ७ पुडत (सप्त ग्रहोंके स्थानरूपी) हैं—यह आडंबर तारागण, नक्षत्र, ग्रहादि सहित

पृ० ०

अचला पृथ्वीके चहुँओर निरंतर परिभ्रमण करता रहता है.

इस दोहेका भावार्थ यह है कि 'गगन' को गमनसेही चिरकाली होनेपर भी ऐसी परमशक्ति प्राप्त होगई है जो मनुष्यादिकके भाग्यको बिगाड़ और बना सक्ताहै, तो इसीके समान यदि तरुणपुरुष नित्यपरमेश्वरकी तलाशमें लगा रहै तो उस सर्व शक्तिमानके प्रसाद से क्या न प्राप्त होगा.

विनय ।

४ १५ -मुखमुकुर— توجہ کردن و حاصل شدن = رو دادن अर्थात् ध्यान देना, आदर करना वा प्राप्त होना—'मुँह लगाने' से मिलता हुवा यह फारसी वाक् संप्रदाय 'मुँह देना' है. دیکھو شعر نمبر ۱۴

उपासना ।

८ ३ —होप—अंगरेजी शब्द है. Hope—आशा.

पश्चात्ताप ।

१० ३ —आँख—आँकना, कूतकरना, अन्दाजकरना.

पृ० नं०

१० ३६–काबा–(کعبہ)–'मक्का' (مکہ معظمہ)का जगद्विख्यात मंदिर है.

जमजम(زمزم)'काबे' के पास एक खारी कुवाँ है जिसके जलको 'मुसलमान' लोग 'गंगोदक' के समान पवित्र मानतेहैं. खारीपानीकी आँसुवोंसे सादृश्यता स्पष्ट है.

१२ ४९–पाहन–(سنگ اسود)'काबे' में एक काला पत्थर है जिसे यात्री लोग चूमते हैं–कोई कहते हैं कि उसमें किंचित् श्वेतचिह्न भी हैं, और संसारमें ज्यों २ पाप और दुराचारकी वृद्धि होती जाती है त्योंही त्यों वह सफेदी लोप होती जाती है. जब वह निश्शेष असित हो जायगा तबहीं (قیامت) प्रलय होगी. कदाचित् इसी को 'मक्केश्वर महादेव' कहते होंगे. (   )(   )-

" " शेखजी–मुसलमानों की चार प्रसिद्ध जाती हैं. سید و مغل و پٹھان (ازغیاث) شیخ ۔ خواجہ پیر =

स्वामी, वृद्ध, गुरु बहुधा कवितामें 'शेख' (شریعت) धर्मशास्त्र प्रतिपादक के अर्थमें

पृ० नं

प्रयोग करते हैं और प्रेममार्गी कविजन विचारे शेखजीका इसीकारण यथोचित् उपहास करते हैं. 'मुहम्मद' साहब शेखथे. (سپیشوا)सिरधरा;(مهتر قوم)मुखिया; (سردار) राजमान्य; यह कौम ब्राह्मणोंके तुल्य पूजनीय मानी जाती है. 'हज़रतअली' और उनके वंशज 'सैयद' कहलाते हैं और शीया (شیعه)मुसलमानोंमें उनकी प्रतिष्ठा अधिकहै.

(محرّم)मुहर्रममें(تعزیه)ताजिया'अली' के पुत्रपौत्रादिके स्मरणार्थ जिनको(یزید)'यज़ीद' ने 'करबला' में वध कियाथा, बनाये जाते हैं;(مغل)मुग़ल यह 'तुर्की' भाषाका शब्द है; (غیاث اللغات)में(مغول)के अर्थ(قومی مشهور) विख्यात जाति;(عمده فرقهٔ ترک)तुर्कोंकी एक श्रेष्ठ जाति;(ساده دل)भोला पुरुष;(شریر) छलिया, लिखे हैं.

'पठान' शब्द हिन्दी ज्ञात होता है क्योंकि 'अरबी' 'फारसी' वर्णमालावोंमें'टवर्ग'नहींहै.

पृ० नं०

पठानलोग क्षत्रियोंके सम तुल्य समझे जाते हैं यह शब्द 'काबुली' भाषाका 'पै ठान' बताते हैं अर्थात् पाउँजमानेवाला.

१२ ४९—जौक—कविका उपनाम

" " बुत—मूर्ति; प्रियतम, निष्ठुर.

ज्ञान।

१४ ५१—अभेद—अद्वैत.

१६ ६४—६४—५-यह दोनों 'सोरठे' परस्पर मिलेहुवेहैं

१८ ७०—परमसुजान—मूलमें (افلاطون شو) 'फलातूं हो'—(फलातूँ Plato) 'यूनान' Greece देशका एक परम प्रसिद्ध तत्त्वज्ञ और चतुर विद्वानथा.

" ७२—अलि—आली वा भ्रमर (चकितमन)

परमार्थ साधन।

२० ७६—असत्ता—अभाव, अहंकारका नाश देखो नं० १९३ तथा २०९

" ७७—जंगारी सिखर—जंगारी रंगका शिखराकार आसमान.

पृ० नं

२० ८ —चपल—पारा;—'चपलोरसः सूचश्चपारदे' इत्यमरः-

२२ ८ —बीग—सं० वृकका अपभ्रंश—भेडिया.

मनशुद्धि।

२४ ९ —साँचा—मोमबत्ती साँचेमें ढाली जातीहै.(شمع) वास्तवमें मोमका नाम है; परंतु बहुधा बत्तीके काममें मोमका उपयोग होने के कारण 'शमा' दीप को कहने लगे.

संतोष।

२८ ११—मूँगा की जड़ें हाथकी अंगुलियों के सदृश- होतीहैं अतएव उन्हें फ़ारसीमें (पंजए मिर्जा) मूँगे का पंजा कहतेहैं.

” ११४—नम्रूद—इब्राहीम—नम्रूद पादशाहके राज्यमें मूर्ति पूजन प्रचलितथा-इब्राहीम पैगंबरने बचपनमें एक दिन अपने पिता'आजर'(آزر) के कारखानेकी सब-मूर्तें खंडन करडालीं और बापने जब कारण पूँछा तो निर्गुण उपासना का उपदेश करने लगे, जब यह झगड़ा

पृ० न०

बढते २ पादशाहतक पहुँचा तो उसने अनेकयत्न करने के उपरांत निरुपाय होके अपने पूर्वजों के धर्म त्यागका दंड इब्राहीम को देना निश्चय किया-और इस हेतुसे उनको प्रज्ज्वलित अग्निमें डलवा दिया; परंतु हरि कृपासे ज्वाला शांत होकर शीतल सौगंध पुष्पवाटिका बनिगई-अंग्रेजीमें इब्राहीम को Abraham और नम्रूद को Nimrod कहते हैं 'इंजील' 'कुरान' इत्यादिमें इनकी कथा सविस्तार वर्णित है. 'प्रह्लाद' 'हिरण्य कशिपु' के आख्यान से यह कथा मिलती हुई है इसलिये दोहे के उत्तरार्ध को यदि 'बाग भई प्रहाद को हिरनाकुशकी आग' पढें तोभी ठीकहै.

२८ ११७—कल्पतरु—पहिले(طوبیٰ)पाठ प्राप्तहुवाथा,इस लिये, 'कल्पतरु' उसका तर्जुमा कियागया क्योंकि—'तूबा' नामक एक वृक्ष 'बहिश्त' में बताते हैं; जिसकी एक २ शाखा प्रति मंदिरमें वहां पसरी हुई है और जिसके

पृ० नं

फलोंमें यह गुणहै कि खानेवाले को यथेच्छ-स्वाद मिलताहै-परंतु(تحفہ)में(طولی)पाठपाया-गया 'यदे तूला'=लम्बे हाथ, अर्थात् कला कौशल्य-अतएव उत्तरार्द्ध दोहेका पाठ बद-लकर 'असन बसन हित हात, लम्बे जग त्यागीनके' अथवा 'उपजीवन हितहात, कुशल होत त्यागीनके' होसक्ताहै

तृष्णा लोभ।

३४ १३ १–कैदफिरंग–जब 'मुसलमानों' और 'ईसाइयों' का परस्पर धर्म सम्बन्धी संग्रामचालूथा (Wars of Crusades)तब जो 'मुस-लमान' 'फिरंगियों' के हाथ पड़जातेथे उन विचारों का छुटकारा अत्यंत कठिन प्रयत्नों से होताथा-अतएव मुसलमानों में ऐसा वाक् प्रचार प्रचलित होगया कि अति क्लिष्ट खेदको 'कैद फिरंग' की उपमा देने लगे.

सम्पन्नता।

३६ १४ ७–मदन पदार्थ–मदन=काम=इच्छा' इच्छा ही सम्बन्ध (تعلق) का कारण भूतहै.

पृ० नं०

३८ १५८—ज़रदार—ज़र(زر)=धन, स्वर्ण, पुष्प,मकरंद; इस पदमें श्लेष स्पष्ट है.

" १५९—द्विज—यह मूलसे अधिक है परंतु इसका श्लेषार्थ दोहेके भावार्थ में खिपताहै द्विज=पक्षी; ब्राह्मण.

उदारता।

४० १६०-यज्ञ-(غیاث اللغات)में(ایثار)शब्दके अर्थ यह लिखेहैं (برگزیدن یعنی منفعت غیر را بر مصلحت خویش مقدم داشتن و این کمال درجه سخاوت است) विवेक करना अर्थात् दूसरे के लाभको अपने अभीष्ट से बढ़कर समझना और यह दातृत्वकी सीमाहै. (Forbes Dictionary) में इस शब्द के माने-(Offering)—'बलिप्रदान' दिये हैं-यज्ञ से यहाँ तात्पर्य दानरूपी यजन से है-पूर्वार्ध को यदि यों पढ़ैं तो भी उचित है—'दान तत्त्वके मरम को, जानो चाहे जोय'—

" १६२—साहसदान—(صوفی)सूफी, ईश्वरप्राप्त्यर्थ जग त्यागको 'साहस' कहते हैं.

४२ १६१—हातिम—'तय'(طے)नाममें 'हातम'एक अत्यंत

पृ० दो०

दानशूर पुरुष हुवाहै; इसी कारण उसे 'हातमे ताई' कहतेहैं-उसने ७महानचमत्कारिक दानकियेथे—किस्सए 'हातमताई' एकविख्यात मनरंजक पुस्तक है उत्तरार्ध को यों पलट दिया जाय तोभी अनुचित न होगा. "करन तुल्य निजदान की, चरचा जिन करिवाउ".

वैराग्य।

४४ १८।—पूत=पवित्र, निर्मल.

४६ १८।—हंस—'हंस'क्षीर और नीरको पृथक् करदेताहै; और परमार्थी लोग हंस'आत्मा'को कहतेहैं.

" १९।—सबन—शव=मृतक.

" " अभाव—असत्ता—देखो नं० ७६ की टिप्पनी

जीवन मरण।

४८ १९।—चोरतकाल—अधिक वय होके तरुणाईकी लालसा में कम उमर बताते हैं.

५० २०।—फलकं—(فلک)आसमान देखो नं०१२की टिप्पनी.

" २०।—देही=देहधारी, जीवात्मा.

पृ० नं०

५० २०९–व्यायाम–स्वास्थ्यके हेतु चलना फिरना.

५२ २११–(سودا) नेकहाहै,

(سودا جہاں سے آکے کوئی کچھ نہ لیگیا ؛ جاتا ہوں ایک میں دل پر آرزو لئے)

" २१९–वापी–बाउड़ी.

" " तडाग–तालाब, सरोवर.

आदर सत्कार ।

५४ २२६–बुदबल–'बुद्धिबल' का 'मरहठी' अपभ्रंश मालूम होताहै=शतरंज; 'चलत २ सतरंज में प्यादा होत वजीर'

" २२७–चसक–'चषक' पानपात्र.

५६ २२८–पिंड–लोहा–'लोहोऽस्त्रीशस्त्रकंतीक्ष्णं पिंडकालायसाऽयसी' इत्यमरः

अभिमान, दैन्य ।

५८ २३७–दोउपाट–मुसलमानी 'शरएशरीफ' (धर्मशास्त्र) के मतानुसार आरोपके सिद्ध करनेके लिये कमसेकम दो साक्षी चाहिये.

सांसारिकगति ।

६० २४५–अमूल–श्लेषार्थ–बहुमूल्य तथा निर्मूल–मूलमें 'ईजाद' निर्माण है, उसमें भी यह श्लेष घटित हो सक्ता है.

पृ० नं०

सुख दुःख।

६४ २६०—आराम—बाग.

" २६८—माठघर—जिस ठौर मद्यसे भरे बड़े २ बरतन रखतेहैं.

६६ २६९—'पीने'का करता मूलमें 'जगत्'है और'दोहे'में व्यंगार्थ स्पष्ट है.

अपचय उपचय।

६८ २७८—चूर चूर—(خود شکنی)'दैन्य' नम्रशीलता.

"दया, निष्ठुरता"।

७० २८८—किसरा—'ईरान'देशमें एक बादशाह'नौशेवाँ' नाम का बडा न्यायशाली हुवाहै,इसी कारण उसको(نوشیروان عادل)कहतेहैं. उसीकानाम 'किसरा' है एकसमय उसने एक महल बनवायाथा जिसकी दीवारकी सीधमें एक गरीब बुढिया की झोंपडी आतीथी—बुढिया झोंपडी छोडने पर राजी नहीं होतीथी—जब बादशाह को उसके हठकी सूचना हुई तो उसने अपने महल की दीवार टेढी करके बुढियाका

पृ० नं०

घर बचादेनेका हुक्म दिया, ऐसी २ अनेक कथाऐं प्रस्तुत हैं.

शत्रु मित्र ।

७४ ३०६—जोड़ा—यह 'रसायनियों' की परिभाषाका शब्द है अधिकांश सस्ती धातुमें थोडी कीमती धातु मिलाके सबको बहुमूल्य बना-लेनेको 'जोडा' बनाना कहते हैं-दूसरा अर्थ स्पष्ट है.

७६ ३१३—यूसुफ़—हज़रत याकूब(حضرت یعقوب)पैगंबरके ७ पुत्र थे-सबसे कनिष्ट'हज़रत यूसुफ़' पर अत्यंत स्वरूपवान और अंशधारी होनेके कारण पिताका पूर्ण स्नेह था—ईर्षा दग्ध ज्येष्ठ भ्राता इनको एक दिन पितासे छल करके जंगलमें लेगये और वहाँ एक अंध कूपमें ढकेल दिया और उनके वस्त्र रुधिरमें रंग लाये-बापसे कहि दिया कि यूसुफ़ को भेडिया खागया—इनको एक सौदागरने 'मिश्र' देशमें बेचा—वहाँ वज़ीरकी स्त्री 'जुलेखा' उनपर आसक्त होगई सो, क़िस्सा प्रसिद्ध है.